

धृति क्षमा दमोस्तेयं शौचं इन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥

Regd. No. 58414/94

स्वामी रामानन्द जी द्वारा संचालित
हमारी साधना

त्रैमासिक

मूल्य रु. 25/-

वर्ष 32 • अंक 1 • जनवरी-मार्च 2025



श्रीगुरु पद नख मनि गन जोती । सुमिरत दिव्य दृष्टि हियँ होती ॥



करुणामयी सुमित्रा माँ

हमारी साधना

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ॥
न त्वहं कामये राज्यम्, न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां, प्राणिनामार्ति नाशनम् ॥

वर्ष : 32

जनवरी-मार्च 2025

अंक : 1

भजन

कैसे तेरो काज सरै।

परिहरि सदा सुखद सुचि प्रभु पद चहुंदिसि भ्रमत फिरै।
लगयो प हाथ कतहुं कछु अबलौं तबहुं न ग्लानि गरै॥
भूलि सकारे साँझ समय जो आवै लौटि घरै।
तौ कछु अबहुं अधिक नहिं बिगरी जदि अस पुनि न करै॥
रे मन मूढ़ कुमति बस अबतौ व्यर्थ न भटकि मरै।
पावन प्रीति प्रतीति राखि उर प्रभु पद पदम धरै॥
जनमन के अघओघ सकल जरि जमके पुर न परै।
रामसरन निहचौं प्रयास बिनु भव से अवसि तरै॥

भजन संख्या 12

- स्व. श्री सूर्यप्रसाद शुक्ल जी 'रामसरन'

प्रकाशक

साधना परिवार

स्वामी रामानन्द साधना धाम,
संन्यास रोड, कनखल,
हरिद्वार-249408
फोन: 01334-311821
मोबाइल: 08273494285

सम्पादिका

श्रीमती रमना सेखड़ी

995, शिवाजी स्ट्रीट,
आर्य समाज रोड
करोल बाग,
नई दिल्ली-110005
मोबाइल: 09711499298

उप-सम्पादक

श्री रमेश चन्द्र गुप्त 'विनीत'

1018, महागुन मैशन-1,
इन्दिरापुरम,
गाजियाबाद-201014
ई-मेल: rcgupta1018@gmail.com
मोबाइल: 09818385001

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	रचयिता	पृ.सं.
1.	चित्र – करुणामयी सुमित्रा माँ		2
2.	भजन	स्व. श्री सूर्यप्रसाद शुक्ल जी 'रामसरन'	3
3.	सम्पादकीय		5
4.	अपील – साधना परिवार की विभूतियाँ		6
5.	भजन – ये नव वर्ष हमें स्वीकार नहीं	राष्ट्रकवि रामधारीसिंह दिनकर (संकलित)	7
6.	भजन – समर्पण (पुरानी पत्रिका से उद्धृत)	डॉ. नानकराम सुन्दरानी	7
7.	भजन – गुरु-वन्दना (पुरानी पत्रिका से उद्धृत)	श्रीमती लज्जावती	7
8.	भजन – प्रभु तेरे चरणों में (पुरानी पत्रिका से उद्धृत)	ब्रह्मलीन अति वरिष्ठ साधक पूज्य श्री बाबू राम जी	8
9.	भजन – चिर प्रतीक्षा में (पुरानी पत्रिका से उद्धृत)	श्री वासुदेव सिंह	8
10.	भजन – हृदयोद्गार (पुरानी पत्रिका से उद्धृत)	श्रीमती सन्तोष नागिया	9
11.	भजन – तेरे नाम का सुमिरन करके		9
12.	श्रद्धांजलि	संकलनकर्ता – सुधीर अवस्थी	9
13.	गीता विमर्श – धारावाहिक	स्वामी रामानन्द जी	10-13
14.	माँ सुमित्रा जी का जन्मोत्सव – विवरण		13
15.	गुरु वाणी – धारावाहिक		14-15
16.	Letters to Seekers – धारावाहिक		16-17
17.	भागवत के मोती – धारावाहिक		18
18.	साधना परिवार की विभूतियाँ – डॉ. श्री गणेश शंकर 'बन्धु' (बन्धु जी) जीवन परिचय एवं कुछ प्रेरणादायक घटनायें – धारावाहिक		19-21
19.	धर्म के दस लक्षण		21
20.	हमारे दादागुरु सन्त शिरोमणि श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज का जीवन परिचय		22-23
21.	One Liner Bhagvad Gita		23
22.	सन्त शिरोमणि श्री पूज्य स्वामी रामानन्द जी महाराज के जीवन की एक झाँकी (पुरानी पत्रिका से उद्धृत)	श्रीमती सन्तोष नागिया	24-26
23.	गुरुदेव श्री स्वामी रामानन्द जी का 108वाँ जन्मोत्सव – विवरण		27
24.	जन्मोत्सव शिविर दिसम्बर 2024 का विवरण व प्रवचन सार		28-33
25.	अष्टांग योग		33
26.	कार्यकारिणी की बैठक का विवरण (18 दिसम्बर 2024)		34
27.	अनमोल बोल		34
28.	दानदाताओं की सूची		35-37
29.	शोक समाचार		37
30.	ईश्वर को सिर्फ पाप नहीं, हमारे पुण्य भी चाहिए	आनन्दमूर्ति गुरुमाँ	38
31.	सेवा के लिये सामग्री नहीं, हृदय की उदारता चाहिए (कल्याण से उद्धृत)	डॉ. मृत्युंजय कुमार त्रिपाठी	39-40
32.	साधना परिवार की कार्यकारिणी के चुनाव (20 अप्रैल 2025) – सूचना		41
33.	श्री गुरुदेव निर्वाण दिवस साधना शिविर-2025 (14 से 21 अप्रैल 2025) – सूचना		42
34.	दिगोली शिविर-2025 (5 से 9 मार्च 2025) – सूचना		42
35.	बाल-साधना शिविर-2025 (28 मई से 1 जून 2025) – सूचना		43
36.	श्री स्वामी रामानन्द जी साधना साहित्य		44

सम्पादकीय

‘हमारी साधना’ के सभी आदरणीय पाठकों को सम्पादक मण्डल का प्रेम भरा नमस्कार, राम राम !
नव वर्ष की शुभकामनाओं के साथ इस वर्ष की प्रथम पत्रिका आपके हाथों में है।

गत तिमाही में 26 फरवरी को अन्तिम स्नान के साथ सम्पन्न हुए 45 दिनों के महाकुम्भ का अवलोकन सभी ने किया होगा। इस महाकुम्भ में प्रयागराज की त्रिवेणी में 66 करोड़ से अधिक की संख्या में श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगाई जो भारतवर्ष, विशेषकर सनातन धर्म के अनुयायियों के लिये शुभ संकेत है। जितना कष्ट झेलकर सभी अवस्था के, सभी वर्गों के स्त्री-पुरुष येन, केन, प्रकारेण प्रयागराज पहुँचे हैं उससे हमारे देश में श्रद्धा के स्तर का अनुमान लगाया जा सकता है। इतना ही नहीं, इतनी भीड़ की व्यवस्था करना भी हमारे नेताओं की कार्यकुशलता, जागरूकता और भगवान् पर विश्वास का प्रतीक है।

कुछ भी हो, हमारा देश वर्तमान में भी आध्यात्मिकता के क्षेत्र में विश्व के अन्य देशों में अग्रणी है। इसका कारण है इस देश में समय-समय पर दिव्य आत्माओं का अवतरण, पवित्र नदियों का बाहुल्य, तीर्थ स्थलों का वर्चस्व, ऋषि मुनियों की उपस्थिति और अनेक स्थानों पर धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन। अस्तु ...

पाठकों को याद दिला दें कि इस वर्ष अप्रैल माह में नई कार्यकारिणी समिति का चुनाव होना है जिसके लिये साधना परिवार का कार्यभार संभालने का अवसर सभी सदस्यों को उपलब्ध है। इस चुनौती पूर्ण कार्य को आगे बढ़ाने के लिये अब नई पीढ़ी को आगे आने की आवश्यकता है। गुरुदेव महाराज की चलाई हुई इस मुहिम को तीव्र गति प्रदान करने के लिये बदलते परिवेश में ढालने का कार्य नवशिक्षित नवयुवक ही कर सकते हैं। इसलिये नोटिस में दिये गये समय में कृपया अपना नाम देने में देरी न करें और सेवा के इस सुअवसर को हाथ से न जाने दें।

साधना परिवार की विभूतियों में इस बार श्री गणेश शंकर बंधु जी की जीवनी पर प्रकाश डाला जा रहा है।

आशा है आपको अपनी इस पत्रिका में अपेक्षित सामग्री मिल रही होगी। त्रुटियों से इंकार नहीं किया जा सकता है। सुधार के लिये पाठकों के सुझाव व मौलिक विचारों के लेख और भजन या कवितायें सदा ही अपेक्षित हैं जो निम्न email-id और whatsapp नम्बरों पर भेजे जा सकते हैं—

mail-id: rcgupta1018@gmail.com

mobile number: 9818385001, अथवा 9711499298, 9582891643

सम्पादक मण्डल

अपील

सुधी पाठकों ने देखा होगा कि कुछ समय से आपकी पत्रिका 'हमारी साधना' में साधना परिवार की विभूतियाँ धारावाहिक रूप में प्रकाशित की जा रही हैं। इस क्रम को चालू रखने के लिये हमें आपके सहयोग की आवश्यकता है। जो साधक श्री गुरु महाराज के सान्निध्य में थे वे सभी पूज्य हैं जिनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं -

1. श्रीमती शीला गौहरी
2. श्री पुरुषोत्तम भटनागर
3. डॉ लक्ष्मी सक्सेना
4. पूज्य गंगा माँ
5. श्री धर्मवीर विग, कानपुर

इनके अतिरिक्त और भी हो सकते हैं जिनके नाम हम भूल रहे हैं। पाठकों से करबद्ध प्रार्थना है कि उपरोक्त वरिष्ठ साधकों या और कोई भी वरिष्ठ साधकों के बारे में किसी के पास कोई भी जानकारी उपलब्ध हो तो चित्र सहित वह जानकारी हमारे साथ साझा करें ताकि नये साधक उनके जीवन और साधना धाम / दिगोली कुटिया / साधना पत्रिका / अन्य ग्रन्थों में उनके योगदान से परिचित हो सकें।

यह जानकारी सम्पादक अथवा उप-सम्पादक को ई-मेल या व्हाट्सएप के माध्यम से भेजी जा सकती है।

धन्यवाद।

विनीत -

सम्पादक मण्डल

ये नव वर्ष हमें स्वीकार नहीं

ये नव वर्ष हमें स्वीकार नहीं,
है अपना ये त्यौहार नहीं।
है अपनी ये तो रीत नहीं,
है अपना ये व्यवहार नहीं।
धरा ठिठुरती है सर्दी से,
आकाश में कोहरा गहरा है।
बाग बाजारों की सरहद पर,
सर्द हवा का पहरा है।
सूना है प्रकृति का आँगन,
कुछ रंग नहीं, उमंग नहीं।
हर कोई है घर में दुबका हुआ,
नव वर्ष का ये कोई ढंग नहीं।
चन्द मास अभी इन्तजार करो,
निज मन में तनिक विचार करो।

नये साल नया कुछ हो तो सही,
क्यों नक़ल में सारी अक्ल वही
उल्लास मन्द है जन-मन का,
आयी है अभी बहार नहीं।
ये नव वर्ष हमें स्वीकार नहीं,
है अपना ये त्यौहार नहीं।
ये धुंध कुहासा छंटने दो,
रातों का राज्य सिमटने दो।
प्रकृति का रूप निखरने दो,
फागुन का रंग बिखरने दो।
प्रकृति दुल्हन का रूप धार,
जब स्नेह सुधा बरसायेगी।
शस्य-श्यामला धरती माता,
घर-घर खुशहाली लायेगी।

तव चैत्र शुक्ल की प्रथम तिथि,
नव वर्ष मनाया जायेगा।
आर्यावर्त की पुण्य भूमि पर,
जय गान सुनाया जायेगा।
युक्ति-प्रमाण से स्वयं सिद्ध,
नव वर्ष हमारा हो प्रसिद्ध।
आर्यों की कीर्ति सदा-सदा,
नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा।
अनमोल विरासत के धनिकों को,
चाहिए कोई उधार नहीं।
ये नव वर्ष हमें स्वीकार नहीं,
है अपना ये त्यौहार नहीं,
है अपनी ये तो रीत नहीं,
है अपना ये त्यौहार नहीं।

— राष्ट्रकवि रामधारीसिंह दिनकर

समर्पण

गुरुदेव तुम्हारे चरणों का, मैं दीवाना बना रहूँ।
तेरे चरणामृत प्यारे का, मैं प्यासा ही बना रहूँ॥
मैं भौरा बन कर घूमा करूँ, तेरे चरणों की कलियों पर।
तेरे चरण यदि दीपक हों, तो मैं परवाना बना रहूँ॥
तेरे चरणामृत प्याले को मैं, दिल भर कर पीता हूँ।
संसारी सुख को छोड़ यहीं, मैं मस्ताना बना रहूँ॥
इस दुनिया की बात ही क्या, मैं स्वर्गलोक को भी छोड़ूँ।
तेरे चरणों से लिपट-लिपट, मैं दीवाना बना रहूँ॥
सर्वस्व निछावर कर अपना, गुरुदेव तुम्हारे चरणों मैं।
तेरी अभय कृपा से ही, मैं पागल सा बना रहूँ॥
तेरा ध्यान रहे, तेरी याद रहे, तेरे प्रेम की ही बस प्यास रहे।
अपनापन सारा मिटा करके, मैं तेरा ही यों बना रहूँ॥
तुम स्वामी मैं सेवक तेरा, तेरे द्वार का दास ही हूँ।
'नानक' की यह आश रहे, बालक तेरा मैं बना रहूँ॥

— डॉ. नानकराम सुन्दरानी

गुरु-वन्दना

ए मेरे गुरुदेव! तुमको कोटि-कोटि प्रणाम हो।
सिर झुकाकर चरणों में, श्रद्धा सहित प्रणाम हो॥
दिव्य नाम का दान दे, सोई जगाई शक्तियाँ।
हे दिव्य पथ के देवता, तुम्हें कोटि-कोटि प्रणाम हो॥
हृदय गुहा में सत्य शक्ति, चेतना भरपूर है।
दी दृष्टि सूक्ष्म आनन्द की, तुम्हें कोटि-कोटि प्रणाम हो॥
तप बल से पाकर तेज, और पाई थीं तुमने सिद्धियाँ।
बांटी खुले हाथों सभी में, कोटि-कोटि प्रणाम हो॥
मंगलमयी महाशक्ति की, गोदी से युक्त थे प्रेम से।
अर्पणकियातन, मन और धन, तुम्हें कोटि-कोटि प्रणाम हो॥
जीवन बनाया राममय, और मस्त थे तुम राम में।
सबको मिलाया राम में, तुम्हें कोटि-कोटि प्रणाम हो॥
सत्य, ज्ञान, आनन्द दिव्य की, 'दीक्षा' दीए परम गुरु।
गुरु पूर्णिमा पर श्रद्धा से, तुम्हें कोटि-कोटि प्रणाम हो॥

— श्रीमती लज्जावती

प्रभु तेरे चरणों में

प्रभु तेरे चरणों में सिर चाहता था
झुकाना लगन से झुका मैं न पाया।
हृदय में बिठाना तुझे चाहता था
जगत को वहाँ से हटा मैं न पाया॥

1. रहे मोह मद क्रोध यूँ मन को जकड़े
छुड़ाता रहा पर छुड़ा मैं न पाया।
कहाँ तेरा अर्चन कहाँ तेरा पूजन
हृदय में तुझे जब बिठा मैं न पाया॥

2. विनय गज की सुन के तुरत उठके आये
मगर उस तरह से बुला मैं न पाया।
थे दौड़े रुदन पर द्रुपद की सुता के
मगर अश्रु ऐसे बहा मैं न पाया॥

3. कहीं बेर झूठे कहीं शाक खाया
मगर भाव उससे खिला मैं न पाया।
बनी नार सुन्दर शिला चरण रज से
वह निज शीश धूलि चढ़ा मैं न पाया॥

4. निभे कैसे नाता तेरे पद कमल का
जगत के ही नाते निभा मैं न पाया।
तेरा प्रेम चाहा मगर मोह जग का
मिटाता रहा पर मिटा मैं न पाया॥

5. सदा सब जगह है तू हर वस्तु में है
पता राम फिर भी लगा मैं न पाया।
तेरे गीत गाने को चाहा किया मन
मगर भाव अपने जगा मैं न पाया॥

– ब्रह्मलीन अति वरिष्ठ साधक पूज्य श्री बाबू राम जी

चिर प्रतीक्षा में

टिमटिमाता हुआ दीप जलता रहेगा।

सजी आरती जो तेरी अर्चना को, तूफानों के झोकों में पलता रहेगा।
पलक पांवड़े को बिछे नैन भीगे, धूमिल सी पथ को निहारा करेंगी।
भले भूल जाओ समाधि लगाकर, प्राणों की हलचल तो पुकारा करेंगी। टिमटिमाता हुआ

भले 'तुम न आओ मेरे मन के मन्दिर।

विकल राग वीणा के तारों पर लेकिन, गुनगुनाता हुआ गीत बजता रहेगा।
रहोगे भला ऐसे कब तक नचाते, जरा मुस्कराओ तो मिलता सहारा।
निराशा से चंचल है मन ये भटकता, फिसलने लगा है अब राही बेचारा। टिमटिमाता हुआ

उठी टीस उर में मचलने लगी है।

अरे प्राण मन को पागल बनाकर, भला ऐसे कब तक छलता रहेगा ?
कहीं हो न ऐसा किनारा मिले ना, निराशा से टक्कर लड़े फूट जाये।
ठण्डी सी सांसें भरे देख मंजिल को, आशा की कड़ियाँ वहीं टूट जायें। टिमटिमाता हुआ

मेरे देव ! आओ हृदयावलम्बन !

सूना सा मन्दिर है छाया अँधेरा, भूला सा कब तक बहलता रहेगा ? टिमटिमाता हुआ

– श्री वासुदेव सिंह

हृदयोद्धार

नयनों में अश्रुधारा लिये, कर में फूलों की माल लिये।
हृदय में एक उद्गार लिये, हम देव-द्वार पर आते हैं।
तेरी मधुर मनोहर याद लिये, अन्तर में तुझे आबाद किये।
प्राणों में विषम विषाद लिये, चरणों में शीश झुकाते हैं।
हे परम दयालु पूर्ण पुरुष, हम तुमको कभी भुला न सके।
अन्तर में तुम्हें बसा कर भी, इन नयनों को समझा न सके ॥

अब इन नयनों पर कृपा करो,

हम नयन पसारे आते हैं।

तुम कैसे मधुर बने इतने? तन मन वारे तुम पर सबने।
अब सर्वस्व लेकर छिप बैठे, यहाँ प्रारण बिलखते रहते हैं।
पथ दिया समर्पण का तुमने, वारा था प्रथम देखा हमने।
कब इन प्राणों को वार सकें, हम घड़ियाँ गिनते रहते हैं।
हे प्रेम देव! अब बतलाओ, कब भेंट करोगे दासी से।
मैं पल-पल राहें देख रही, कब दरश नाथ के होते हैं।

— श्रीमती सन्तोष नागिया

तेरे नाम का सुमिरन करके

तेरे नाम का सुमिरन करके मेरे मन में सुख भर आया।
तेरी कृपा को मैंने पाया, तेरी दया को मैंने पाया ॥टेक॥
दुनियाँ की ठोकर खाकर, जब कभी हुआ बेसहारा।
ना पाकर अपना कोई, जब मैंने तुम्हें पुकारा ॥
हे नाथ मेरे सिर ऊपर, तूने अमृत बरसाया ॥1॥
तू संग में था नित मेरे, ये नैना देख न पाये।
चंचल माया के रंग में, ये नैन रहे लिपटाये ॥
मैं जितनी बार गिरा हूँ, तूने पग-पग मुझे उठाया ॥2॥
भवसागर की लहरों में, भटकी जब मेरी नैय्या।
तट छूना भी मुशिकल था, नहीं दीखे कोई खिवैया ॥
तू लहर बना सागर की, मेरी नाव किनारे लाया ॥3॥
हर तरफ तुम्हीं हो मेरे, हर तरफ तेरा उजियारा।
निर्लेप प्रभुजी मेरे, सब जगत् तुम्हीं ने धारा ॥
तेरी शरण में आकर दाता, तेरा तुझ ही को चढ़ाया ॥4॥

श्रद्धांजलि

सद्गुरु को परिभाषित कर दूँ,
मैं इतना अभिजात नहीं।
मेरे जीवन में तो कुछ भी,
सद्गुरु सम सौगात नहीं ॥

परम ब्रह्म के एक मात्र,
प्रतिरूप हमारे सद्गुरु हैं।
अष्ट सिद्धि नव-निधि के दाता,
धाता और विधाता सद्गुरु हैं ॥

विषम विषाद-ग्रस्त होता जब,
आकुल-व्याकुल मेरा मन।
सद्गुरु के आशीष-वचन से,
जीवन होता संजीवन ॥

प्रातः उठ कर गुरु चरणों की,
प्रथम वंदना हम करते।
समय सारिणी के अन्तर्गत,
दिवस विघ्न सारे हरते ॥

सद्गुरु को परिभाषित कर दूँ,
मैं इतना अभिजात नहीं।
मेरे जीवन में तो कुछ भी,
सद्गुरु सम सौगात नहीं ॥

संकलनकर्ता
सुधीर अवस्थी

गीता विमर्श

अध्याय 6

(गतांक से आगे)

किस प्रकार से योगी शान्ति की साधना करे? के साथ।

योगी युञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः।

एकाकी यतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः ॥10॥

‘एकान्त में टिककर, अकेला रहता हुआ, चित्त तथा आत्मा को वश में करके आशा तथा परिग्रह से रहित होकर, लगातार आत्मा को जोड़े’ ॥10॥

अकेला साधना करे, किसी के साथ मिलकर नहीं। इस साधना में संग-साथ विक्षेप का कारण होता है। यह ‘ध्यान की साधना’ व्यक्ति को अकेले ही करनी होगी।

और ‘रहसि स्थितः’ – दूसरों की नजर से बचकर। ‘रहस्’ से ही ‘रहस्य’ होता है। जिसे कोई दूसरा जाने नहीं। ऐसी जगह बैठे जहाँ लोगों को पता न चले। जंगल में हो। घर की कोठड़ी में भी बन्द हुआ जाता है। अर्धरात्रि में भी रहस् होता है जब सब सोये होते हैं।

इतनी छिपाने की चेष्टा क्यों? छिपाने से विकारों की जागृति की सम्भावना से बचाव होता है। दूसरों की दृष्टि से और संकल्पों से भी तो विक्षेप होता है। मान प्राप्त हो सकता है दूसरों के जानने से और उसके द्वारा डिगाया जा सकता है।

आरोह का मार्ग पतन के भय से आक्रान्त है, अतः यहाँ कई प्रकार का रहस् है। किसी से अपनी अनुभूति का भी वर्णन न करना चाहिए।

‘यतचित्तात्मा’ चित्त तथा आत्मा को वश में करके साधन हो सकता है। चित्त तो मन-बुद्धि का द्योतक है और आत्मा से तात्पर्य है शरीर का। मन-बुद्धि वश में नहीं होंगे तो घबरा जायेगा। जम ही न सकेगा। एक दिन की साधना से कुछ होने का नहीं, सम्भवतः जन्मान्तर में सफलता मिले। अतः मन-बुद्धि को तैयार कर ले, यह काम करना है धैर्य

शरीर साथ देगा तभी साधन होगा। यह आरोह का साधन तो घण्टों की निश्चल बैठक की मांग करता है। यदि शरीर सधा नहीं तो परेशानी होगी। व्यक्ति शरीर को सहनशील बना ले, आसन का अभ्यास हो, खानपान का संयम हो, तब साधन की गाड़ी चलती है।

‘निराशीः’ – आशा से रहित। लौकिक आशा से तो रहित हो ही, ध्यान के विषय से भी आशा से रहित हो। उतावला न हो। उत्सुक भी न हो कि अब यह अवस्था आने वाली है! हाय जल्दी क्यों नहीं आती। बनी क्यों नहीं रहती! भीतर के जगत् में, साधन के क्षेत्र में भी अनासक्त, फलाकांक्षा से रहित होकर साधन करना होगा।

‘अपरिग्रहः’ – परिग्रह से रहित। अपने साथ झमेला न रखे, न अनावश्यक वस्तुएँ रखे और न व्यक्तियों को रखे। जितनी वस्तुएँ अथवा व्यक्ति समीप में होंगे, जितनी मेरा-मेरी की पुनरावृत्ति होगी उतना ही चित्त भागेगा। उतनी ही सिद्धि दूर होगी। बाह्य त्याग की यह उपयोगिता है।

स्पष्ट ही है कि इस साधना के साथ बहुत सांसारिक काम-काज की ठेलमठेल से कुछ समय के लिये तो हटना ही होगा। अठारहवें अध्याय में तो स्पष्ट कहा – ‘विविक्तसेवी’ – एकान्त सेवन करने वाला।

इस प्रकार रहते हुए योगी को क्या करना चाहिए ‘युञ्जीत सततमात्मानम्’ – लगातार अपने को जोड़े। आत्मा से जोड़े, ब्रह्मनिष्ठ होने की चेष्टा करे। लगातार चेष्टा करता रहे। रात-दिन का अनवरत प्रयत्न हो, ऐसा निर्देश है। नितान्त अन्तर्मुखता की मांग है। धीरे-धीरे ही इतना हो सकना सम्भव होता है। समझदारी की मांग है कि साधना उतनी बढ़ाये

जो शरीर साथ दे सके। यदि व्यक्ति इस सीमा को लांघेगा तो अभ्यास बिलकुल समाप्त करना पड़ेगा। अतिशय करने का परिणाम होता है कुछ समय के बाद साधन से अरुचि। बड़ी समझदारी से चलते हुए साधन को बढ़ाते जाना होगा। आत्मभाव में सदा ही प्रतिष्ठित रहने की चेष्टा होनी चाहिए।

किस प्रकार से अभ्यास करें यह आगे के दो श्लोकों में कहा है –

**शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः।
नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजिनकुशोत्तरम् ॥11॥
तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः।
उपविश्यासने युञ्ज्याद्योगमात्मविशुद्धये ॥12॥**

‘पवित्र स्थान में अपना स्थिर आसन बनाकर, जो न अति ऊँचा हो और न अति नीचा हो, जिसमें सबसे ऊपर सूती वस्त्र हो, उसके नीचे मृग-चर्म और उसके नीचे कुशासन हो। वहाँ आसन पर बैठकर चित्त तथा इन्द्रियों की क्रियाओं को वश में करके मन को एकाग्र करके आत्मविशुद्धि के लिये योग करें’ ॥11, 12॥

ध्यान करने के लिये पवित्र स्थान होना चाहिए। मन की एकाग्रता इन बाह्योपकरणों पर वास्तव में निर्भर नहीं करती, परन्तु प्रारम्भिक अवस्थाओं में इन बातों से सहायता अवश्य मिल जाती है। पवित्र स्थान का विशेष प्रभाव होता है। मन शीघ्र ही शान्त हो जाता है। जैसा स्थान होता है वैसा ही प्रभाव होता है। मन्दिर में जाकर, नदी तट पर, एकान्त रम्य वन में मन स्वतः शान्ति लाभ करता है। बाहर की शान्त तरंगें उसे भी शान्त कर देती हैं। अतः पवित्र स्थान के लिये निर्देश किया गया है।

बैठने के लिये ढंग का आसन होना चाहिए। आसन स्थिर हो, हिलता न हो। हिलने वाली चौकी या पटले पर या तख्त पर बैठने से तो बार-बार हिल जाने से मन एकाग्र न हो पायेगा। छत पर हो तो लोगों के आने जाने से यदि छत कांपेगी तो भी मन न लग सकेगा। आसन स्थिर हो।

हमारा बैठना भी स्थिर होना चाहिए। यदि पाँच-पाँच मिनट में आसन बदलना पड़ेगा तो भी कुछ हाथ न लग पायेगा। व्यक्ति इस प्रकार से बैठे कि पर्याप्त समय तक बिना हिले डुले बैठ सके।

आसन कैसा हो? नीचे कुशा बिछी हो या कुशा का आसन हो। उसके ऊपर मृगचर्म और उसके ऊपर से कोई सूती कपड़ा हो। आसन बिजली के प्रवाह को रोकने वाला होना चाहिए। भजन में बैठने से शरीर में बिजली की मात्रा बढ़ जाती है। पृथ्वी से सम्पर्क होगा तो वह पृथ्वी में बहती रहेगी, इससे जो ध्यान की घनी अवस्था आ सकती थी वह न आयेगी। आसन नर्म होने से बैठना सुगम होता है। नीचे कुशा से आसन नर्म रहता है। मृगचर्म से सम हो जाता है, कोमल हो जाता है और नीचे से सर्दी सीलन आदि नहीं आ पाती। ऊपर सूती कपड़ा बिछाने से बाल नहीं चुभते। चर्म की रक्षा होती है। सफाई भी रह सकती है क्योंकि सूती-वस्त्र तो धोया जा सकता है।

और, आसन न बहुत ऊँचा हो न बहुत नीचे। मानसिक-प्रभाव होता है बहुत ऊँचे या बहुत नीचे बैठने का। ऊँचे बैठने में एक अस्थिरता की सी और अजीबपन की प्रतीति होती है। नीचे होने में लगता है मानो गड्ढे में पड़े हैं। मन में स्वस्थता लाने के लिये आसन की ठीक स्थिति सहायक होती है।

वहाँ, वैसे स्थान में आसन पर बैठ कर क्या करना होगा? आत्म की विशुद्धि के लिये योग करना होगा। कर्म के द्वारा काफी शोधन हो जाता है, परन्तु पूरा शोधन तो नहीं हो सकता। सूक्ष्मरूप में संस्कार तथा वासनार्यें रहती हैं। उनके लिये आवश्यक है यह साधना। आत्मशोधन के लिये साधन करे-ऐसा उद्देश्य सामने रखता हुआ।

चित्त तथा इन्द्रियों की क्रियाओं को वश में कर ले। चित्त से तात्पर्य है बुद्धि तथा हृदयगत स्पन्दनों से। व्यक्ति को विचार आते हैं, संकल्प-विकल्प होते हैं और उन्हीं के साथ भावों की जागृति होती है। इन

सभी स्पन्दनों पर अधिकार प्राप्त करना होगा। इनकी दिशा बदलने की और इन्हें रोक देने की योग्यता पैदा करनी होगी। व्यक्ति इनकी क्रियाओं को और इन्द्रियों की क्रियाओं को रोक सके।

मन को एकाग्र करके, एक ही लक्ष्य की ओर धारा-प्रवाह रूप से बहने वाला बनाकर, एक ही ओर लगाए। मन को विचार-शून्य नहीं करना है। उसके सामने लक्ष्य रख देना है। मन को उसी लक्ष्य में (बिना इधर उधर गए), लगाए रखना होगा। यही है एकाग्रता। एक ही ओर निकला हुआ, एक ही दिशा में बहता हुआ मन एकाग्र होता है। एकाग्रावस्था में मन की क्रिया तो होती है परन्तु वह बँधी हुई एक ही दिशा में होती है।

समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः।

संप्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन् ॥13॥

प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः।

मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत् मत्परः ॥14॥

‘(स्वयं) स्थिर बैठा हुआ, शरीर, शिर और गर्दन को बराबर (एक सीध में) रखे हुए, अपनी नासिका की नोक को देखकर, दिशाओं को न देखता हुआ, प्रशान्त हुई आत्मा वाला, भयरहित, ब्रह्मचर्य के व्रत का पालन करता हुआ, मन को वश में करके, मत्पर हुआ (मुझ में चित्त लगाये हुए) साधन में लगा रहे’ ॥13, 14॥

युक्त शब्द जुड़े रहने के लिये, लगे रहने के लिये अभ्यास करते रहने के लिये आता है। मन की एकाग्रता तथा समता का सूचक भी है। प्रयत्न में लगा रहे ऐसी भावना है इसके पीछे।

साधक साधन करे मत्पर हुआ, मुझे अपने जीवन की गति मानता हुआ, सर्वस्व जानता हुआ। और ‘मच्चित्तः’ मुझ में चित्त लगाए हुए। भगवान् में, पुरुषोत्तम में चित्त लगाए हुए अभ्यास करे। यह निर्गुणोपासना का निर्देश नहीं। यह तो सगुणोपासना का आदेश है। साधक को बैठकर भगवान् का चिन्तन करना होगा, उसे ही जीवन का परम लक्ष्य समझ कर चलना होगा।

तो क्या यह साधना ज्ञान की निष्ठा वालों के लिये है अथवा कर्मनिष्ठा वालों के लिये है। वास्तव में यह साधना आत्म-विशोधन की साधना है। कर्ममार्ग का साधक जब इस अवस्था को लाभ करता है तो उसके लिये यह आदेश है। भगवान् सुगम मार्ग का निर्देश करते हैं। कर्म के साथ भक्ति की निष्ठा तो मेल खाती ही है।

मुझ में चित्त कैसे लगेगा? जब मन पर लगाम होगी। जब वह काबू में होगा और काबू में कैसे होगा? काबू में करने से, प्रभु के चिन्तन से। एकाग्रता, एकाग्रता के अभ्यास से ही तो होती है। मन का ठीक उपयोग करने से वह उस काम के लायक हो जाता है। प्रभु चिन्तन से मन काबू में होने लगता है। करने से करना आता है। जो लोग इस सीधी सी बात को नहीं समझते वह मन की चंचलता से घबरा जाते हैं। सोचते हैं यह हमारे बस का नहीं। पर वह तो अधीरता है, ना-समझी है। करने से संयम आता है। सवारी करने से घोड़े की सवारी आती है। गाकर गाना सीखा जाता है।

और क्या-क्या करना होगा?

बैठने में ध्यान रखना होगा कि पीठ, गर्दन और सिर समरूप से एक सीध में हैं। कुछ भी आगे, पीछे या दायें-बायें न झुका होना चाहिए। इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि तनाव हो जाये शरीर में। तनाव तो जितना कम से कम होगा उतना ही ध्यान अच्छा हो सकेगा। जहाँ तनाव होता है, वहीं मन जाता है। ठीक स्थिति अनुभव से जानी जाती है। यह नियम आरोहमार्ग के लिये ही है। अवरोह के लिये नहीं।

शरीर स्थिर रहना आवश्यक है। गर्दन को मोड़ने की, झुकाने की अथवा कमर को ऊपर-नीचे, आगे-पीछे करने की आवश्यकता न होनी चाहिए। शरीर सम तथा स्थिर रह सकना चाहिए ध्यान के समय में। ऐसी अवस्था में भी तनाव न होना चाहिए।

नासिकाग्र का ध्यान करने का आदेश है। जब दृष्टि नासिकाग्र में टिकाई जाती है तो स्वतः ही जोर

पड़ता है 'आज्ञा-चक्र' पर, जो भ्रूमध्य में है और आज्ञाचक्र भीतर के नाड़ी-मार्ग से ब्रह्मरंध्र से सम्बद्ध है। अतः नासिकाग्र में ध्यान करने से ब्रह्मरन्ध्र तक रास्ता खुल सकता है।

ध्यान खुली आँखों से होगा या बन्द से? जरा सी खुली रखना आवयक होगा, तभी चल पायेगा। दिशाओं को न देखें, दृष्टि पूर्णरूपेण नासिकाग्र पर ही जमा दें। इधर-उधर दृष्टि के भागने से भीतर से जागृति न हो पायेगी।

'प्रशान्तात्मा' - खूब शान्त हुई आत्मावाला। ऊपर 7वें श्लोक में भी 'प्रशान्त' का प्रयोग हुआ है युक्त व्यक्ति के लिये। व्यक्ति को अपने को शान्त कर लेना चाहिए। अशान्ति के कारणों को समझकर उन्हें निपटा देना होगा। बैठने से पूर्व ही कोई काम करने के लिये सामने हो तो करके बैठना अच्छा है। कोई निर्णय करने को हो तो करके समाप्त करना चाहिए प्रसंग को। मन को उलझाये न रखना चाहिए। जिस बात का हम अभी निर्णय नहीं कर सकते, उस विषय में सोचना व्यर्थ है।

'विगतभीः' - भय से रहित। डर होने पर एकाग्रता असम्भव है। मन बार-बार खिंच जाता है डर के कारण की ओर। कई लोगों को यह डर होता है कि हमें कोई देख न ले कि हम

भजन करते हैं। सभी हड़बड़ाहटों को, परेशानी के कारणों को एक-एक करके खोजकर ठीक समझ के द्वारा निकाल देना चाहिए। वस्तुतः ठीक सोचना बहुत कम लोगों को आता है। जो मन का ठीक उपयोग करता है वह जल्दी ही स्वामी बन जाता है अपने मन का।

साधक को 'ब्रह्मचर्यव्रत' का पालन करना होगा। वीर्य की रक्षा, सभी प्रकार के मैथुनों से बचना, तपोमय जीवन, यही तो ब्रह्मचर्य के प्रधान अंग हैं। वेदपाठ से यहाँ कुछ प्रयोजन नहीं है।

वीर्य की स्थिरता होने पर मन की स्थिरता होती है। वीर्य की अस्थिरता से मन भी चञ्चल हो जाता है। बाकी साधन तो मन की स्थिरता के लिये हैं। मैथुन से बचने से वीर्य की रक्षा स्वयं हो जायेगी।

आरोहमार्ग की साधना बिना वीर्य की नितान्त रक्षा के चल नहीं पाती। गृहस्थी जो ऋतुगामी होता है उसे भी ब्रह्मचारी कहते हैं, परन्तु ध्यान के क्षेत्र में (इस मार्ग में) नितान्त वीर्य रक्षा की मांग है। वीर्य स्खलन होने पर लगता है मानो सभी जो कमाया था सो खो दिया।

आवश्यक बातें सभी कह दी गई हैं। अब इस साधना का फल बताते हैं।

(क्रमशः)

माँ सुमित्रा जी का जन्मोत्सव

प्रत्येक मास की 7 तारीख को माँ सुमित्रा की जन्मतिथि के उपलक्ष्य में साधना धाम हरिद्वार में अखण्ड जाप व प्रसाद वितरण किया जाता है।

दिनांक 7 दिसम्बर 2024 को इस उपलक्ष्य में 7 दिवसीय अखण्ड जाप आरम्भ किया गया जिसकी पूर्ति 14 दिसम्बर को उनके निर्वाण दिवस के अवसर पर 11 ब्राह्मणियों को भोजन तथा दक्षिणा के साथ की गई। इसके अतिरिक्त दिनांक 13 दिसम्बर को रामायण का अखण्ड जाप आरम्भ किया गया जिसकी पूर्ति 14 दिसम्बर को की गई।

गुरु वाणी

गुरु वाणी में इस बार हम स्वामी जी महाराज के एक ऐसे पत्र की पाण्डुलिपि प्रस्तुत कर रहे हैं जो पहले कहीं नहीं छपा है। गुरु महाराज के हाथ से लिखे पत्र को पढ़कर ऐसा लगता है कि महाराज स्वयं हमारे सामने बैठ कर लिख रहे हैं। लिखावट की सुन्दरता बरबस ही मन को मोहित करने वाली है। पाठकगण गुरु महाराज की उपस्थिति की अनुभूति करके भाव विभोर हो सकते हैं।

पत्र संख्या 2 श्रीराम भीलवाड़ा
07.05.1944

मेरे प्रिय -- (1)

आपका दिनांक 5 का पत्र मेरे समक्ष है। इन दिनों अत्यधिक व्यस्तता के कारण मैं शीघ्र पत्रों का उत्तर न दे सका। आपकी सूचना पढ़कर मुझे प्रसन्नता हुई। परमात्मा सचमुच ही कृपालु है।

आध्यात्मिक साधन खण्ड 1 के रूपांगता नामक चैप्टर को पढ़ने से अच्छी समझ उत्पन्न होगी। यह समझना आवश्यक है कि आरिचर विचार प्रतिगामी और प्रतिशोधी होते हैं। ध्यान की प्रक्रिया को परमोच्च सच्चा नियन्त्रित करने में सहायक होती है और उस की परिपूर्णता भी। जितना ही तादात्म्य परमसत्ता के सापेक्षकार का रूप धारण करेगा उतना ही अधिक परिणाम में लाभ परिलक्षित होगा। उस महाशक्ति ने आपका भली-भांति पकड़ रखा है और वह अधिकाधिक संतुलन, पौष्टि, शान्ति और आनन्द की ओर अबाध राति से अग्रगामी बनारस हट्ट है। उस महाशक्ति में पूर्ण विश्वास परमावश्यक है। जितना संभव हो उस शक्ति के समक्ष अपने को खोल दो। पूर्ण सम्पत्ति की उत्कट आकांक्षा उपेक्षित है।

जहां तक और अधिक पुस्तकों का प्रश्न है, आप गीता और रामायण में रमण कर सकते हैं। रामकृष्ण मिशन पब्लिकेशन की पुस्तक रामकृष्ण का जीवन, जिसकी भूमिका (प्रस्तावना) रमण के शान्धी द्वारा लिखी गई है, इसका पढ़न भी लाभकारी सिद्ध होगा। परन्तु इस पुस्तक को विवेकपूर्ण ढंग से पढ़िए। अधिक बहने और बहकने से बचिए। टी० रस० पब्लिकेशन की पुस्तक स्वटि फीट आफ मास्टर भी उपयोगी सिद्ध होगी। आर० उल्लू० टायन द्वारा लिखित पुस्तक इन टूयून विदइन्फिनिट दूसरी पढ़नीय स्व प्रशासनीय पुस्तक है।

जीवन को एक उच्चतर स्तर से देखने का प्रयास किया जाना चाहिए। एक से अधिक क्रमिक सफलताओं से अधिक उलभनें श्री विकलतायें विकास के लिए अधिक मूल्यवान हैं। क्षमतायें एक कारक हो सकती हैं, संसार में उनकी सरव भी हैं, परन्तु यही यथार्थ है रेसा मानना मामक होगा। जीवन का एक प्रेक्ष व उच्चतर उद्देश्य है। वस्तुतः सभी मूल्यों का आकलन इसी से किया जा सकता है। परमसत्ता की दृष्ट द्वाया में कुछ भी उरने या चिन्तित होने की किंश आवश्यकता नहीं है। अगर रेसा है तो हमने उसे समझा नहीं है।

(2)

हमारे साथ जो भी व्यरित हो रहा है उसे पूरे मनोयोग से बदलित करने और स्वीकार करने के अतीव्रक्त कोई मार्ग दुःखशेष नहीं है। शनैः शनैः हृदय इस पाठ को हृदयगम कर लेगा। उतावलापन नहीं। समय चक्र पूरा होने दें। आत्मविश्वास से भरे रहें। और यह सबक सीखना ही होगा, यदि भय और चिन्ताओं को आक्रान्तता से मुक्त होना है।

जो भी राम नाम के चमत्कारिक प्रभाव के बारे में लिखा है, वह स्वागतयोग्य है। क्या आपने मेरी हाल ही में प्रकाशित पुस्तक 'उत्पादनी शक्ति' पढ़ी है? क्या आप ऐसा सोचते हैं कि इसका अंग्रेजी संस्करण भी लाभदायक होगा? अगर ऐसा है तो क्या आप इसे किसी व्यक्ति को सुझा सकते हैं जो इस कार्य को करने में सक्षम है।

आपका प्रभु के नोत्र
रामानन्द

कैसे मिटाया जाता है आपा ?

अपनी रुचियों और चाह का त्याग करके।

अपने सुख की परवाह न करके।

“यही त्याग सेवा होती है। सेवा तो मनोवृत्ति है।

दूसरों के लिए उपयोगी होने की

सच्ची क्रियाशील भावना है।

सेवा करके स्वार्थपरता दूर की जाती है।

निःस्वार्थ हुआ जाता है। यज्ञमय हुआ जाता है।

यज्ञमय पुरुषोत्तम का प्रत्यक्ष पूजन होता है -

सेवा।”

Letters to Seekers

Letter No. 24

: Shri Ram :

158, Civil Lines, Bareilly.

06.11.1944

My dear,

Both your letters to hand. I have got the stamps for which accept my thanks.

The Krishna of Bhagwatgita and Bhagwat and the Rama of Ramayana to me appear to be of a different order than Buddha, Christ, Mohammed etc. Christ called himself the son of God, and Mohammed his messenger. I do not know if Budha made any claim or not, but in the case of Rama and Krishna, we see the position of Purshottama assumed directly. (However, how much of mythology is laid over the stories of Rama and Krishna we can not say). Another outstanding difference is that we can not call them (Rama & Krishna) saints. They were men of the world. They had practised no vigorous sadhna to attain to the heights in the lives under examination. I think different entities, though of a very high order, shadowed Christ and Mohammed. We find both at times devoid of the support but nothing such in the case of Rama and Krishna. Budha, I hope is a different category. He was in charge of the spiritual evolution of the age. I may call them all avatars, and also Shri Chaitanya (after the book Lord Gauranga by Shishir Kumar Ghosh) but of a different order. I think that I know them more by calling them world-teachers, for that is the part they played. Occasional and temporary avatars are said to be numerous.

It should not be difficult to find out the reason why India had the privilege of both the avatars. It has been the school for spirituality in the world since ages, to argue in the same strain.

Having said all that, I may tell you, that the very authenticity of the stories of Rama and Krishna is doubttable. As they stand in our ancient texts, I see more of mythology than fact. Secondly, having propounded this theory, I value it no more than mere theory. I shall feel not the least sorry to wash my hands of it. For it is hard to be sure about these things, while encased in this material brain, and in reality I bother not at all for surety. Nor do I desire that it should carry definite conviction in any mind.

Yes, you can know your past lives and those of others when in full oneness with the omniscient, but only if you have the desire then.

I shall write to the publisher to send you the works of Swami Satyanand Ji. I do not know whether he agrees with Aurobindo or not, cent per cent. You can consult the Bhakti Prakash if it can help you. I myself have enjoyed perfect intellectual freedom at his hands and the same do I offer to my associates. In all matters except those which immediately

concern your spiritual side, it is best to develop a free outlook. In the matter of sadhna try to follow the instructions as sincerely, rigidly and enthusiastically as possible, and things will be gradually becoming clear to you of themselves. All views have to be left behind to face the Lord; yes you must rid yourself of your intellectual raiment before you can be ushered into the Presence, and this is called intellectual surrender. I value thoughts and opinions as 'passing shadows'. What if his views agree with Aurobindo? I myself may differ from him and even from Aurobindo. What counts, is realization. Live for it, breathe and die for it. When you develop this intensity and sincerity of aspiration, you will fast approach the Lord and His Grace will come down in torrents. Look only to the practical utility of all that you think and do. That has paid me and I hope it will pay you.

That dogmatism and sectarianism has found place in me, and to what degree, I myself can not safely judge. Others rid of these will be much better judges. But I can only say that I have honestly tried on my part to demolish the two in myself and in those that chose to associate with me. If it is yet there, I am perfectly sure that the Lord who is leading me on will not rest till they are thoroughly rooted out. I have been too long, I fear. I hope you will kindly excuse.

My comments will follow under separate cover.

With sincere regards.

Yours in the Lord,
Ramanand



सम्मुख होना
आज्ञा मानना
शंकर प्रिय होना
ये तीन लोग भगवान को प्रिय हैं।



निषिद्ध कर्म का कारण है कामना।
कामना पूर्ति में समय लगाना समय का दुरुपयोग है।

भागवत के मोती

अप्रैल 2023 अंक से पत्रिका में श्रीमद्भागवत के चुने हुए सन्देश छपने आरम्भ हुए हैं। इस अंक में प्रस्तुत है इन सन्देशों की आठवीं कड़ी -

36. जब सत्वगुण की वृद्धि होती है, तभी जीव को मेरे भक्तिरूप स्वधर्म की प्राप्ति होती है। निरन्तर सात्विक वस्तुओं का सेवन करने से ही सत्वगुण की वृद्धि होती है और तब मेरे भक्तिरूप स्वधर्म में प्रवृत्ति होने लगती है।

जिस धर्म के पालन से सत्वगुण की वृद्धि हो, वही सबसे श्रेष्ठ है। वह धर्म रजोगुण और तमोगुण को नष्ट कर देता है। जब वे दोनों नष्ट हो जाते हैं, तब उन्हीं के कारण होने वाला अधर्म भी शीघ्र ही मिट जाता है।

- भागवत 11.13.2-3

37. ज्ञानी पुरुष का अभीष्ट पदार्थ मैं ही हूँ। उसके साधन-साध्य, स्वर्ग और अपवर्ग भी मैं ही हूँ। मेरे अतिरिक्त और किसी भी पदार्थ से वह प्रेम नहीं करता।

जो ज्ञान और विज्ञान से सम्पन्न सिद्ध पुरुष हैं, वे ही मेरे वास्तविक स्वरूप को जानते हैं। इसीलिये ज्ञानी पुरुष मुझे सबसे प्रिय हैं। उद्धव जी! ज्ञानी पुरुष अपने ज्ञान के द्वारा निरन्तर मुझे अपने अंतःकरण में धारण करता है।

- भागवत 11.19.2-3

38. जब स्थिर करते समय मन चंचल होकर इधर-उधर भटकने लगे, तब झटपट बड़ी सावधानी से उसे मनाकर, समझा बुझा कर, फुसलाकर अपने वश में कर ले। इन्द्रियों

और प्राणों को अपने वश में रखे और मन को एक क्षण के लिये भी स्वतन्त्र न छोड़े। उसकी एक-एक चाल, एक-एक हरकत को देखता रहे। इस प्रकार सत्वसम्पन्न बुद्धि के द्वारा धीरे-धीरे मन को अपने वश में कर लेना चाहिए।

- भागवत 11.20.19-20

39. जो साधक समस्त कर्मों से विरक्त हो गया हो, उनमें दुःख-बुद्धि रखता हो, मेरी लीलाकथा के प्रति श्रद्धालु हो और यह भी जानता हो कि सभी भोग और भोगवासनाएँ दुःख-रूप हैं, किन्तु इतना सब जानकर भी जो उनके परित्याग में समर्थ न हो, उसे चाहिए कि उन भोगों को तो भोग ले, परन्तु उन्हें सच्चे हृदय से दुःखजनक समझे और मन ही मन उसकी निन्दा करे तथा उसे अपना दुर्भाग्य ही समझे। साथ ही इस दुविधा की स्थिति से छुटकारा पाने के लिये श्रद्धा, दृढ़ निश्चय और प्रेम से मेरा भजन करे।

- भागवत 11.20.27-28

40. समय वही पवित्र है जिसमें कर्म करने योग्य सामग्री मिल सके तथा कर्म भी हो सके। जिसमें कर्म करने की सामग्री न मिले, आगन्तुक दोषों से अथवा स्वाभाविक दोष के कारण जिसमें कर्म ही न हो सके, वह समय अशुद्ध है।

- भागवत 11.21.10

साधना परिवार की विभूतियाँ

प्रिय पाठको,

कुछ समय पूर्व आपकी इस पत्रिका ने उपरोक्त शीर्षक नाम से एक धारावाहिक का शुभारम्भ किया था जिसका उद्देश्य था वर्तमान समय के साधकों को ऐसे साधकों से परिचय कराना जो पूर्व में साधना परिवार के स्तम्भ थे, जिससे कि उनका योगदान भूतकाल के गर्भ में दबकर विलुप्त न हो जाये।

इस विषय के अन्तर्गत साहू काशीनाथ जी तथा उसके बाद श्री सूर्य प्रसाद जी शुक्ल की जीवनियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। वर्तमान पत्रिका में हम एक अन्य अत्यन्त उच्च कोटि के साधक डॉ. गणेश शंकर जी 'बन्धु' की जीवनी पर प्रकाश डालने की चेष्टा करेंगे। प्रस्तुत है इनके जीवन की पहली कड़ी –

डॉ. श्री गणेश शंकर 'बन्धु' (बन्धु जी) जीवन परिचय एवं कुछ प्रेरणादायक घटनायें

श्री बन्धु जी का जन्म 23 मार्च 1916 को रामनगर, मन्धना, कानपुर में श्री माता प्रसाद जी शुक्ल के घर हुआ था। शिक्षा के क्षेत्र में आपने साहित्य भूषण, साहित्य शिरोमणि, साहित्य मनीषी, साहित्य रत्न, एम.ए., एवं पीएच.डी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। अपने 97 वर्ष (23 मार्च 1916 से 2013) के जीवन काल में रचित आपकी लगभग 30 कृतियों (गद्य और पद्य दोनों) का उल्लेख मिलता है जिनमें 'स्वामी रामानन्द बावनी', 'स्वामी जी के सिद्धान्त' तथा पूज्य गुरुदेव के प्रति 'श्रद्धांजलि' भी सम्मिलित हैं।

कानपुर से प्रकाशित सम्मानित समाचार पत्र 'राष्ट्रीय सहारा' ने दिनांक 18 जुलाई 2008 के अंक में श्री बन्धु जी के विषय में अपने विचार प्रकाशित किये थे। उसके कुछ अंश नीचे दिये जा रहे हैं –

1. अच्छे से अच्छा पढ़ाकू व्यक्ति अपनी सारी जिन्दगी में जितना पढ़ पायेगा, बन्धु जी ने उससे ज्यादा लिख डाला है। गद्य और पद्य। सत्ताईस पुस्तकें। इनमें 'दशरथ', 'ककुआ का बियाहु' प्रबन्ध काव्य और देश भर में ग़दर मचाने वाली लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु पर लिखी कविता 'प्रश्न अभी तक प्रश्न ही बना

हुआ है।' उनकी पहचान हैं।

- 80 साल की उम्र में ख्याल आया कि अरे, जिस कवि को देखो डॉक्टर है, तो पीएच.डी. कर डाली। इतिहास, निबन्ध, समीक्षा, कहानी, गज़ल, गीत, भजन, छन्द, मुक्तक, द्विपदी, दोहा, चौपाई और अतुकान्त कविता – उन्होंने कोई विधा छोड़ी ही नहीं है।
- श्री बन्धु जी का जीवन संघर्षपूर्ण रहा। दो साल के थे कि पिताजी चल बसे। घर चलाने के लिये माँ ने कपड़े सिलने शुरू किये। हाई स्कूल के बाद उन्हें मजबूरन नौकरी करनी पड़ी। उन्होंने ट्यूशन भी किये और माँ का कपड़ा सिलना छुड़ा दिया। इसमें काव्य रचना से भी अधिक सुकून मिलता था।
- पीलीभीत की शुगर मिल में केमिस्ट के रूप में काम किया और कोचिंग भी की। फिर काशीपुर, शुगर फ़ैक्ट्री में चले गये। दोनों ही जगह उन्होंने साहित्यिक माहौल बनाया। पीलीभीत में हिन्दी साहित्य परिषद् की स्थापना की। काशीपुर से कहानी की मासिक पत्रिका 'नीरजा' निकाली।
- बन्धु जी की कविता में गजब की विविधता है। 'पशुपालक' पत्रिका ने जब बन्धु विशेषांक

- निकाला तो उसमें बन्धु जी ने सारी कवितायें पशुओं से सम्बन्धित ही लिखीं। आशु कविता चूँकि बन्धुजी की पहचान बन गई थी, इसलिये मंच पर कैची, सूई, गाय, नेता, बकरी, कुर्सी जैसे बेतुके विषयों की पर्चियाँ जातीं और बन्धु जी तुरन्त इन पर कविता सुना डालते। श्रोता हँसते-हँसते लोटपोट हो जाते। इसीलिये श्री बन्धु जी को हास्य व्यंग्य का भी मंजा हुआ कवि माना जाने लगा।
6. बड़ईगीरी तो पाठ्यक्रम में थी जो उन्होंने स्कूल में ही सीख ली थी, राजगीरी और लोहारगीरी शौकिया सीखी। कपड़े सिलना तो दर्जी को बाकायदा गुरु बनाकर सीखा। शुगर केमिस्ट

तो वे रह ही चुके थे, उन्होंने गोल्डन सीरप, शुगर क्यूब्स और मुल्तानी मिश्री बनाने की ट्रेनिंग भी ली। हाथ में घुंघरू बांध कर तबला भी बजा लेते थे। चित्रकला भी की। ज्योतिष पढ़कर कुण्डली भी बनाने लगे।

7. बन्धु जी की कविता हौसला देती है, हिम्मत देती है, ऊर्जा देती है, गति देती है, लय देती है, सोच देती है। उनकी जिन्दगी भी यही सब कुछ देती चलती है। सन् 2004 में 88 वर्ष की आयु में कैंसर ग्रस्त टांग को घुटने से कटवा देना और वह भी बिना बेहोश हुए, उसके बाद मुस्कराते हुए ऑपरेशन थियेटर से निकलना, हिम्मत की पराकाष्ठा है।

पूज्य स्वामी जी से परिचय

श्री बन्धु जी पूज्य स्वामी जी के सान्निध्य में कब, कहाँ और कैसे आये – इस तथ्य की जानकारी तो उपलब्ध नहीं हो पाई किन्तु उनका सम्पर्क श्री गुरु महाराज से हुआ अवश्य था यह उनके निम्न कथन से इंगित होता है जो उनकी 'श्रद्धांजलि' नामक पुस्तक से उद्धृत है –

'मेरे गुरुदेव! आपसे सम्पर्क होने से पूर्व मैं एक अकिंचन और उपेक्षित मृत्तिका के उस दीप के समान था जिसमें न तो वर्तिका थी और न कोई प्रकाश की किरण। आपने मुझ पर कृपा करके अपना स्नेह दिया, ज्ञान की वर्तिका सँजोई और अध्यात्म की अखण्ड ज्योति प्रज्वलित की, जो निरन्तर जल रही है और उसी के पावन प्रकाश में मुझे परम सुख-शान्ति का अनुभव हो रहा है।'

पूज्य गुरुदेव के प्रति अपनी अटूट श्रद्धा को व्यक्त करने हेतु श्री बन्धु जी ने उनके गुणों का मुक्त कण्ठ से वर्णन किया है जिनमें से कुछ चुनिन्दा उद्धरण यहाँ दिये जा रहे हैं। ये उद्धरण श्री बन्धु जी द्वारा विरचित 64 पृष्ठों की पुस्तक

में से लिये गये हैं जिनको पढ़ने से हमें इस बात का परिचय मिलता है कि श्री बन्धु जी कितनी उच्च कोटि के समर्पित भक्त थे पूज्य स्वामी जी के।

1. हे गुरुदेव! आप हम सब साधकों के लिये आस्था और विश्वास के सशक्त केन्द्र थे। आप से ही शिष्यों को जीवनी शक्ति प्राप्त होती थी। यही आन्तरिक शक्ति उसे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता प्रदान करती है।
2. हे निस्पृह योगी! आपको अपने लिये कोई भौतिक कामना नहीं थी। वर्तमान युग की सुख सुविधाओं को भोगने की ओर आपका ध्यान कभी गया ही नहीं। न आपको यश की कामना थी, न नाम की, न धन की, न धाम की, न अशन की, न वसन की, न पद की, न प्रतिष्ठा की, न आश्रम की, न पीठ की। न व्याधि की चिन्ता, न किसी समाधि की उत्कण्ठा। आपकी साधना थी केवल जगज्जननी महाशक्ति के आदेशों का पालन करना और

अपने को पूर्ण रूपेण समर्पण कर देना। सभी प्राप्त सुख सुविधाओं को त्याग कर आपने चुनी थी दिगोली कुटिया की चीड़ की शुष्क पत्तियाँ, जिन पर बैठकर आप अपनी तपस्या में सतत लीन रहते थे। आपकी इसी तपस्या का प्रताप है जो आज भी हम साधकों का पथ प्रदर्शन करता रहता है।

3. आप में साधना के पथ प्रदर्शन की अपूर्व क्षमता रही है। जटिल से जटिल परिस्थितियों को बड़ी सरलतापूर्वक सुलझाकर आपने अपने अनुयायियों का कुशल मार्ग दर्शन किया है। साधना की सरलतम पद्धति का सृजन कर हर एक के लिये प्रभु-प्राप्ति का एक ऐसा पावन मार्ग दिखलाया है जिस पर चलकर अधम से अधम, अज्ञानी से अज्ञानी व्यक्ति भी सहज ही महाशक्ति माँ की पावन गोद प्राप्त कर सकता है।
4. संन्यासी वेश धारण करने पर भी आपने समाज से अपने को विलग नहीं समझा। जन-जन की सेवा करना आपका धर्म बन गया। सेवा के किसी कार्य को आपने अधम नहीं समझा।

अपने शिष्यों के हाथ पाँव चापे, सिर पर तेल मला, उनके पदत्राण तक अपने हाथ से उठाकर यथास्थान रखे। इतना ही नहीं, आपने तो एक शिष्य का मल तक उठाकर फेंका। किसी सन्त में इतना उच्च कोटि का सेवा भाव मिलना बड़ा दुर्लभ है। सचमुच आप एक आदर्श साधु थे। श्री गुरु महाराज के अपने शब्दों में – ‘केवल गेरुये वस्त्र पहनने या जंगल में निवास करने से ही व्यक्ति साधु नहीं हो जाता, अपितु प्रेम के रंग में रंगा जाकर तथा प्रेम और सेवा की भट्टी में जलकर बनता है आदर्श साधु। और जिसे अपने कल्याण की कामना नहीं रहती वह है साधु।’

इन मूल्यों को देखते हुए हम दृढ़तापूर्वक कह सकते हैं कि आप वास्तव में आदर्श साधु थे। आपने स्वयं अपने लिये कुछ नहीं चाहा। पैसा कभी हाथ से नहीं छुआ। यश से आप कोसों दूर रहे। आपने कभी आश्रम नहीं बनवाना चाहा। आपका कथन था कि हर घर हमारा आश्रम बन जाना चाहिए। किसी एक स्थान पर कोई विशेष आश्रम बनाने के आप कभी पक्षधर नहीं रहे।

शेष अगली कड़ी में.....

धर्म के दस लक्षण

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

यदि आप धैर्यवान हैं, क्षमाशील हैं, संयमी हैं, चोरी नहीं करते, शुद्धि रखते हैं, आपकी इन्द्रियाँ धर्माचरण वाली हैं, उत्तम बुद्धि के अभिलाषी हैं, उत्तम विद्या के इच्छुक हैं, सत्यवादी और अक्रोधी हैं तो – आप शुद्ध ‘मनुवादी’ व्यक्ति हैं।

महाराज मनु ने धर्म के यही दस लक्षण बताये हैं।

हमारे दादाशुभ सन्त शिरोमणि श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज का जीवन परिचय

दिव्य मूर्ति स्वामी सत्यानन्द जी महाराज का जन्म चैत्र शुक्ल पूर्णिमा 26 अप्रैल सन् 1861 को पश्चिमी पंजाब के 'जग्गू का मोरा' नामक गाँव के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। बाल्यकाल में ही माता-पिता का देहान्त हो जाने पर इनकी नानी जी ने इनका पालन-पोषण किया। दस वर्ष की आयु में उनका शरीर भी शान्त हो गया। उसके पश्चात् ये कुछ विद्वानों के सत्संग से संस्कृत का अध्ययन करते रहे और शास्त्रों का ज्ञान अर्जित किया।

सन् 1900 तक दीक्षा लेकर जैन धर्म में रहे। क्रमशः इन्होंने अनुभव किया कि एकान्त साधना ही पर्याप्त नहीं है। धर्म का उद्देश्य केवल व्यक्ति का उद्धार नहीं है, वरन् समाज का भी उत्थान होना चाहिए। ऐसे ही विचारों के फलस्वरूप सन् 1900 में महाराज जी आर्य समाज से सम्बन्धित हुए। महाराज जी जैसे तपोनिष्ठ विद्वान को पाकर समाज निहाल हो गया।

सन् 1925 में ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव के समय एकान्तवास करने की आन्तरिक प्रेरणा हुई। परम शान्ति की कामना से तथा प्रभु से सान्निध्य प्राप्त करने की उत्कट इच्छा से हिमालय के डलहौजी नामक स्थान में एकान्त जीवन बिताते हुए कुछ काल तक अनवरत साधना की। एक दिन जब चित्त-वृत्तियाँ सविकल्प समाधि से ऊपर की ओर अग्रसर हो रही थीं, एक दिव्य ज्योति प्रकट हुई और एक दिव्य ध्वनि हुई 'राम भज, राम भज, राम राम'।

इस मन्त्र की प्राप्ति से अभूतपूर्व शान्ति की अनुभूति हुई। निश्चय किया कि प्रभु-कृपा से प्राप्त इस 'राम' के प्रसाद महामन्त्र को त्रिताप-तप्त मानवों में वितरित करना चाहिए। सम्प्रदाय, जाति भेद और

मत-मतान्तर की संकुचित सीमाओं को अस्वीकृत कर मानवमात्र के प्रति करुणार्द्र होकर इसी बीजमन्त्र का प्रसाद बाँटते रहे। यह क्रम अनवरत रूप से ब्रह्मलीन होने के समय तक चलता रहा। 99 वर्ष की दीर्घ आयु में इन सिद्ध महात्मा ने रविवार 13 नवम्बर, 1960 को, रात्रि के 10 बजे, 21 बँगलो रोड़, दिल्ली में निर्वाण पद प्राप्त किया।

महाराज जी योगसिद्ध पुरुष थे। योग ग्रन्थों में जिन सिद्धियों का वर्णन किया गया है, वे उन्हें सहज प्राप्त थीं; परन्तु उनके बालसुलभ भोले व्यक्तित्व को देखकर कोई भी व्यक्ति उनकी सिद्धि और महत्ता को जान नहीं पाता था। महाराज जी अपने सिद्ध व्यक्तित्व को रहस्य के पर्दे में छिपाये रहते थे।

महाराज जी द्वारा प्रणीत अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं जैसे भक्ति-प्रकाश, वाल्मीकीय रामायणसार, श्री मद्भगवद्गीता, एकादशोपनिषद् संग्रह, प्रार्थना और उसका प्रभाव, उपासक का आन्तरिक जीवन, भक्ति और भक्त के लक्षण, स्थितप्रज्ञ के लक्षण, प्रवचन पीयूष, भजन एवं ध्वनि संग्रह और अमृतवाणी।

इन सबमें से 'अमृत वाणी' महाराज जी का ऐसा अवतरित लघु ग्रन्थ है जिसमें उनके अनुभूत सिद्धान्तों का सार संचित है। सांसारिक दुःखों और तीन पापों से ग्रस्त लोग जब स्वामी जी महाराज जी के पास शान्ति और सुख पाने की आशा लेकर आये तो उनका हृदय द्रवित हो गया और उन्होंने जन-कल्याणार्थ 'अमृत वाणी' की रचना की।

राम-मन्त्र एक चिन्तामणि है, जिससे लौकिक तथा पारलौकिक सभी चिन्तायें दूर हो जाती हैं। 'राम-नाम' युग-युग का सहेला है। भक्त अकेला नहीं रहता, भगवान् स्वयं उसके सहायक होते हैं।

अमृत वाणी का नित्य गाना ।
 राम-राम मन बीच रमाना ॥
 देता संकट विपद् निवार ।
 करता शुभ श्री मंगलाचार ॥

ऐसे ही दिव्य-विचारों की मणियाँ पिरोकर
 'अमृत वाणी' नामक जपमाला प्रस्तुत की गई है
 जिसके सहारे सब कुछ पाकर, भक्त निहाल हो

सकता है, यदि वह श्रद्धा और विश्वास के साथ उसे
 धारण करे। महाराज जी ने उग्र साधना द्वारा जिन
 चिरन्तन और रहस्यमय तत्वों का साक्षात्कार किया
 था, उन्हें आकार में छोटे परन्तु भाव में अत्यन्त
 गम्भीर इस ग्रन्थ में एकत्र कर दिया है। मानवमात्र
 के कल्याण के लिये इस प्रसाद का वितरण है।
 कल्याणकामी जन आवें और इसे ग्रहण करें।

One Liner Bhagvad Gita

- Chapter 1 – Wrong thinking is the only problem in life.
- Chapter 2 – Right knowledge is the ultimate solution to all our problems.
- Chapter 3 – Selflessness is the only way to progress and prosperity.
- Chapter 4 – Every act can be an act of prayer.
- Chapter 5 – Renounce the ego of individuality and rejoice the bliss of infinity.
- Chapter 6 – Connect to the higher consciousness daily.
- Chapter 7 – Live what you learn.
- Chapter 8 – Never give up on yourself.
- Chapter 9 – Value your blessings.
- Chapter 10 – See divinity all around.
- Chapter 11 – Have enough surrender to see the truth as it is.
- Chapter 12 – Absorb your mind in the higher values.
- Chapter 13 – Detach from Maya and attach to divine.
- Chapter 14 – Live a life-style that matches your vision.
- Chapter 15 – Give priority to Divinity.
- Chapter 16 – Being good is a reward in itself.
- Chapter 17 – Choosing the right over the pleasant is a sign of power.
- Chapter 18 – Let go, let us move to union with God.

(Introspect on each one of this principle)

सन्त शिरोमणि श्री पूज्य स्वामी रामानन्द जी महाराज के जीवन की एक झाँकी

(पुरानी पत्रिका से उद्धृत)

बीसवीं शताब्दी के इस महान सन्त का स्मरण होते ही मस्तक श्रद्धा से झुक जाता है, उसके पावन चरणों में – जिसने इतनी अल्पायु में सर्वस्व अर्पण कर दिया, भूली-भटकी मानवता को सीधे सत्य पथ पर लाने के हेतु।

इस विकास के युग में आध्यात्मिक विकास की प्रणाली को चलाने वाला वह सद्गुरु, यद्यपि इस समय अपने स्थूल शरीर को त्याग चुका है, तथापि उसका बताया हुआ मार्ग, और उसका महान जीवन, आने वाली पीढ़ियों का सच्चा, सुखद और शान्तिप्रद पथ-प्रदर्शन करेगा। उसका पथ विशुद्ध समर्पण का पथ है, गीता का समर्पण अर्थात् पूरी तरह से अपने आपको उस महाशक्ति माँ के, जिसे परमसत्ता या भागवती चेतना कहते हैं, हाथों में सौंप देना और निश्चिंत होकर अपनी जीवन नैय्या को चलाना।

संसार को ज्योति सदा पूर्व से ही मिली है। आध्यात्मिकता का पथ दर्शाने वाला यह सन्त उस अलौकिक ज्योति से विभूषित है जो स्थूल में आज न होते हुए भी अपने सूक्ष्म प्रभाव से संसार के विकास की माँग पूरी कर रहा है।

लम्बा सा कद, गौर वर्ण, दुबला-पतला शरीर और दिव्य आकृति वाले इस महापुरुष का जन्म 16 दिसम्बर सन् 1916 को दोपहर बाद दो बजे ललितपुर गाँव (जिला झाँसी) के एक पंजाबी खत्री परिवार में हुआ था। इनके पिता श्री साईदास जी कारोबार के सिलसिले में वहाँ रहते थे। इनका शैशव भी वहीं बीता। इनका बचपन का नाम शिशुपाल था, जो कि इन्हें बिल्कुल पसन्द नहीं था। कारण कि महाभारत का एक पात्र है 'शिशुपाल' जो भगवान कृष्ण को अपना शत्रु मानता था। बाद में इन्होंने

स्वयं ही अपना नाम 'रामानन्द' रखा। इनके दादा जी जो कि मुंसिफ थे, अत्यन्त ही सदाचारी और सादा थे। आर्य समाजी विचारों के होने के कारण उन्हें उन दिनों सामाजिक बहिष्कार का सामना भी करना पड़ा। उनके कई किस्से 'शिशु' ने बचपन में सुन रखे थे, जिनका उनके मन पर बहुत प्रभाव पड़ा।

शिशु ढाई वर्ष के ही थे, जब उनकी माता का देहान्त हो गया। मातृ-प्रेम से वंचित होने के कारण यह उदास से रहते थे, बच्चों वाला चुलबुलापन इनमें नहीं था। चेहरे पर गम्भीरता की छाप थी; पिता जी को मातृत्व का पद भी ग्रहण करना पड़ा, पर कुछ समय बाद जब इनके बड़े भाई का विवाह हो गया तो परम उदार, शीलवती भाभी ने उन्हें अपने हृदय से लगा लिया, और वहीं से उनके जीवन का विकास प्रारम्भ हुआ।

तत्पश्चात् यह अपने भाई के पास लाहौर में रहने लगे, और वहीं इनकी शिक्षा का प्रारम्भ हुआ। प्राथमिक शिक्षा इन्होंने आर्य समाजी संस्थाओं में पाई। शिक्षा में आप सर्वप्रथम रहते थे, शायद ही कभी दूसरे आये हों। इसलिये सदैव शिक्षकों के स्नेह भाजन और सहपाठियों के आदर पात्र रहे। इनकी विलक्षण प्रतिभा का यहीं से पता चलता है कि पांचवीं कक्षा से लेकर एम.ए. तक सदा ही छात्रवृत्ति पाई और कई एक विषयों में पंजाब विश्वविद्यालय में रेकार्ड कायम किया।

बचपन से ही ये बड़े आदर्शवादी रहे हैं। हाई स्कूल तक अपने पाठ्यक्रम के अतिरिक्त ऊँचे दर्जे का साहित्य भी पढ़ा। चूँकि सर्वप्रथम रहने से पुरस्कार के रूप में पुस्तकें भी मिली थीं। अब तक इनका आदर्श वही रहा जो आर्य समाज का है, और

स्वामी दयानन्द जी के जीवन का भी आप पर बहुत प्रभाव पड़ा।

हाई स्कूल के बाद कॉलेज में उन्होंने गाँधी साहित्य का अध्ययन किया; इसके प्रभाव में आये, मगर कॉलेज जीवन में कई ऐसे प्रसंग जीवन परिवर्तन करने वाले आये, जिनसे 'शिशु' बदलते भी रहे और यहीं पर आत्म चेतना की जाग्रति हुई – ईश्वर विषयक अध्ययन, चिन्तन, मनन करने लगे। हठ योग में रस पैदा हुआ, और आसन प्राणायाम भी करने लगे। इस प्रकार नूतन परिवर्तन आने लगा, साथ ही व्याकुलता भी बढ़ी।

इन्टर की परीक्षा में आप सारे पंजाब में सर्वप्रथम रहे; इन बातों से परिवार वालों की आकांक्षा बढ़ी, वह अपने बेटे को बड़ा सरकारी अफसर बना हुआ देखना चाहते थे, मगर यहाँ चिंगारी ही और पड़ चुकी थी; पठन, मनन और चिन्तन से वह ज्वाला के रूप में बदलती ही जा रही थी। एक तरफ आन्तरिक प्रेरणा के विरुद्ध कदम उठाना मौत से भी दुःसह था; दूसरी ओर से परिवार वालों का स्नेह ऐसा करने के लिये मजबूर कर रहा था। घर वालों ने सिविल सर्विस का दरवाजा खोलने के लिये डी.ए.वी. कॉलेज से नाम कटवाकर गवर्नमेन्ट कॉलेज में भरती करवाया। परिणामस्वरूप सादे, सरल अकृत्रिम वायुमण्डल से तड़क-भड़क और विलासिता भरे वायुमण्डल में जा पड़े। आन्तरिक संघर्ष शुरू हुआ; आघात प्रत्याघात होने लगे; भावी प्रतिक्रिया की नींव पड़ी। इसी अरसे में स्वामी विवेकानन्द जी का साहित्य पढ़ा, भीतर से रास्ता साफ होने लगा। संकल्प शक्ति बढ़ने लगी, पूर्व संस्कार जाग्रत हुए, प्राप्तव्य का भान होने लगा। जीवन निर्माण और सेवा का क्षेत्र खुला; दर्शन तथा अध्यात्म शास्त्र का अध्ययन शुरू हुआ। चरित्र-निर्माण की ओर तो आप पहले से ही ध्यान दे रहे थे। विचार आचार में बदलने लगे, फूल अब मीठे फल के रूप में परिवर्तित होने लगा – आन्तरिक अनुभूतियाँ जगीं। 'भगवान ने मुझे अपना लिया है'

– ऐसा विश्वास जगा। इन सबका मस्तिष्क पर जोर पड़ा। सामान्य अध्ययन भी असम्भव सा प्रतीत होने लगा। ऐसे समय पथ-प्रदर्शक की आवश्यकता थी। स्वामी सत्यानन्द जी के सम्पर्क में आये; इसी सम्पर्क ने भविष्य की नींव डाली। इस आध्यात्मिक पठन-पाठन के साथ कॉलेज की पढ़ाई भी चलती रही: बी.ए. में दर्शन शास्त्र जो कि उनका मन माना विषय था, लिया और इसके बाद एम.ए. की, और शास्त्री भी। नौकरी करना असम्भव था, लेकिन सारा परिवार सिविल सर्विस की ओर धकेल रहा था। इस परिस्थिति में रहना कठिन था, थोड़े समय के लिये वहाँ अध्यापन कार्य किया।

निदान एक अन्तर्नाद जागृत हुआ: घर वालों से कहा कि एक मास के बाद मैं सम्पूर्णतया प्रभु का हो जाऊँगा। घर में रोज वाग्युद्ध होने लगे; तरह-तरह से रोकने का यत्न किया गया; आँसुओं के जाल बिछाये गये। घर वाले अपना बनाना चाहते थे पर भगवान के आगे घर वालों की क्या चल सकती थी? दिन बीतने लगे – सप्ताह बीता और महीना बीत गया। वह दिन आया। संकल्प पर दृढ़ थे; विदा का समय आ गया। प्रियजन अपने आँसू नहीं रोक सके और प्रियजनों के आँसू आपको नहीं रोक सके। स्वामी सत्यानन्द जी की अनुमति और आशीष की भी आवश्यकता नहीं समझी। उस मंगलमय प्रभु के आदेश के आगे किसकी अनुमति और किसका आशीष? चला एक 25 साल का युवक प्रियजनों के बन्धन को तोड़कर अपने प्रियतम की खोज में। चल पड़े अलमोड़े के पहाड़ों में। संन्यासी के वेश में दिगोली नामक स्थान पर एक वर्ष के लगभग साधना की और अपने ध्येय को प्राप्त किया, और यहीं से निकल पड़े दुःखी संसार का दुःख मिटाने – जो कुछ उस बृहद् भण्डार से पाया था उसे सांसारिक जीवों में दोनों हाथों से बाँटने के लिये। एक जोगिया लम्बा कुर्ता शरीर पर; पैरों में काले बाटा के स्लीपर पहिने हुए यह कौपीनधारी बालक साधु के रूप में

शोभायमान रहता था। उनके हाथ में एक थैला (Bag) होता था, जिसमें गीता, प्रतिदिन के अनुभव लिखी जाने वाली एक डायरी। पत्र-व्यवहार के लिए पैड (Pad), एक माला, टॉर्च और एक बायोकैमिक औषधियों (Biochemic Medicine) का बॉक्स, या एक-आध पुस्तक और होती थी किसी महापुरुष सम्बन्धी; एक तौलिया, दूसरा कुर्ता, लंगोटी इत्यादि, यही कुछ होता था उनका सामान। उनका निजी घर कोई नहीं था बल्कि सारे विश्व को वह अपना घर समझते थे। कहीं दो दिन, कहीं चार दिन। पंजाब, संयुक्त प्रान्त, दिल्ली, मध्य प्रदेश आदि प्रान्तों में स्थान-स्थान पर घूमते थे और लोगों को साधना का पथ दिखाते थे: राम-नाम बाँटते थे जो तीन तापों से मुक्त करने की अचूक औषधि है।

उपदेश आदि के बाद अपना बायोकैमिक का बक्सा खोल कर बैठ जाते थे। दुःखी लोग उनके इर्द-गिर्द हो जाते, उनकी दवाइयाँ भी रोगियों के लिए संजीवनी का काम करती थीं। सच तो यह है कि दवाइयाँ तो चिन्ह मात्र होती थीं। वास्तव में तो उनका संकल्प ही काम करता था। जिसे एक बार भी आशीर्वाद दे देते या हँसी-हँसी में कुछ कह देते, वह सत्य हो जाता था, जिससे भक्त लोग सदा ही उनके आशीर्वाद के इच्छुक रहते थे। कई तो इन्हें

इस युग का क्राईस्ट (Christ) मानते थे। निःस्वाध सेवा और विशुद्ध प्रेम ही इस महापुरुष के विशेष गुण थे। जो भी दीन दुःखी उनकी शरण में आया उसे उन्होंने हृदय से लगाया। उन्हें सांसारिक और पारलौकिक यातनाओं से मुक्त होने का उपाय बताया। दया और करुणा की तो वह साक्षात् मूर्ति थे। सबके सगे, सबके अपने बन जाते थे – पुत्रहीन के पुत्र, किसी के भाई, किसी की माँ, किसी की पत्नी, और सब भक्तों के सर्वस्व थे। पास में पैसा न रखते हुए भी वह दुःखी माताओं के एकमात्र आश्रय बन जाते थे। किसी रोगी को देख लेते तो सब कार्य छोड़ कर उसकी सेवा में जुट जाते थे। सेवा के महत्व को बतलाते हुए वह अपनी पुस्तक 'अध्यात्म साधन' भाग-2 में लिखते हैं – 'प्रेम भरी सेवा से संस्कार क्षीण होते हैं और मनुष्य इतना ऊँचा उठ जाता है, जितना कि कठोर से कठोर तपस्या से भी नहीं'। वह तो प्रत्येक रूप में, कण-कण में उस महाशक्ति माँ के दर्शन करते थे; कोई भी उनका पराया न था। ऐसा था उनका अलौकिक व्यक्तित्व एवं चरित्र! कहाँ तक वर्णन किया जाय – 'लघु मति मोरि चरित्र अवगाहा'। इस पुनीत अवसर पर हमें उस देवाधिदेव के प्रति स्नेह एवं श्रद्धा सहित नत मस्तक होने के सिवाय दूसरा चारा भी क्या है?

– श्रीमती सन्तोष नागिया

प्रत्येक मनुष्य शाश्वत, असीम एवं अनन्त आनन्द की इच्छा करता है किन्तु कोई भी उस तुच्छ एवं अल्प सुख का त्याग नहीं करना चाहता है जो थोड़े इन्द्रिय भोग अथवा थोड़ी प्रशंसा से प्राप्त होता है। यही कठिनाई है।

गुरुदेव श्री स्वामी रामानन्द जी का 108वाँ जन्मोत्सव

गुरुदेव महाराज का 108वाँ जन्मोत्सव 16 दिसम्बर 2024 को विभिन्न केन्द्रों पर धूमधाम से मनाया गया जिनका विवरण नीचे दिया जा रहा है –

साधना धाम हरिद्वार: जन्म महोत्सव का शुभारम्भ 15 दिसम्बर 2024 के सायंकाल के सत्र से आरम्भ हुआ जिसमें सायं 6:00 बजे के सामूहिक जाप के पश्चात् दिनांक 16 दिसम्बर प्रातः 7:00 बजे तक अखण्ड जाप चला। उसके पश्चात् साधना धाम हरिद्वार के प्रांगण में प्रातः 10:00 बजे से 12:00 बजे तक विधिवत हवन की क्रिया सम्पन्न की गई जिसमें लगभग 125 साधक भाई बहन उपस्थित रहे। तदोपरान्त ब्राह्मण भोज का आयोजन किया गया जिसमें 11 ब्राह्मणों तथा साधना सदन के 11 साधुओं सहित 22 साधुओं को भी दक्षिणा के साथ भोजन कराया गया।

दोपहर 2:00 बजे से 4:00 बजे तक साधना मन्दिर में केक काटकर नृत्य एवं भजनों का आनन्द उठाया गया जिसमें लगभग 125 साधकों की उपस्थिति रही। सायं 6:00 बजे से 9:00 बजे तक साधना धाम के प्रांगण में टैण्ट लगाकर भजन सन्ध्या का आयोजन किया गया जिसमें स्थानीय इस्कॉन मन्दिर के पुजारियों एवं गायकों ने मधुर भजनों से दर्शकों को मन्त्रमुग्ध किया। उसके पश्चात् लगभग 200 साधकों तथा आमन्त्रित अतिथियों ने गंगा घाट पर प्रीतिभोज का आनन्द लिया।

साधना धाम के मन्दिर को सुन्दर फूल मालाओं से तथा प्रांगण को रंग बिरंगी लाइटों से सुसज्जित किया गया।

दिगोली: स्वामी रामानन्द तपस्थली दिगोली में बाड़ाछीना के बसन्त तिराला तथा दिगोली के श्री पंकज पाण्डे जी के तत्त्वाधान में जन्म महोत्सव मनाया गया जिसमें सुन्दरकाण्ड का पाठ तथा स्थानीय लोगों द्वारा भजन व भण्डारे का आयोजन किया गया।

कानपुर: कानपुर में गुरुदेव महाराज का जन्मोत्सव लाल बंगला, रामबाग, दबोली, वैरी, कृष्णा नगर केन्द्रों

पर हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

मुम्बई: मुम्बई केन्द्र में गुरुदेव महाराज का जन्मोत्सव बहन सुशीला जायसवाल जी की अध्यक्षता में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

बरेली: माननीय अध्यक्ष जी की प्रेरणा से जयनारायण इंटर कॉलेज विद्या मन्दिर, बरेली में पूज्य गुरु महाराज का जन्मोत्सव प्रधानाचार्य डॉ. रवि शरण जी चौहान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें लगभग 1500 छात्रों ने भाग लिया। इसमें सुन्दरकाण्ड का पाठ, माल्यार्पण तथा प्रसाद वितरण किया गया जिसका सारा व्यय कॉलेज के प्राचार्यों द्वारा वहन किया गया।

बीसलपुर: माननीय अध्यक्ष जी के तत्त्वाधान में सरस्वती विद्या मन्दिर बीसलपुर में पूज्य गुरुदेव का जन्मोत्सव समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। यहाँ श्रद्धेय प्रधानाचार्य श्री वीरेन्द्र जी मिश्र की अध्यक्षता में 70 आचार्यगण व 1500 छात्र-छात्राओं ने मिलकर गुरु पूजन, माल्यार्पण तथा प्रसाद वितरण करके समारोह को सम्पन्न किया।

अहमदाबाद: पूज्य गुरुदेव की असीम अनुकम्पा से प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 16 दिसम्बर को पूज्य गुरुदेव का 108वाँ जन्मोत्सव बहुत धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर श्री रामचरितमानस का अखण्ड पाठ 15 दिसम्बर को दिन के 11:00 बजे से 16 दिसम्बर दिन के 11:00 बजे तक किया गया। इसी दिन दोपहर 2:00 बजे से सायं 5:30 बजे तक स्तुति, कीर्तन, नृत्य, प्रवचन व प्रसाद वितरण आदि करके उत्सव मनाया गया। इस कार्यक्रम में बहन कुसुम माहेश्वरी जो मुम्बई से आई थीं, मुख्य अतिथि रहीं और प्रवचन में उनका साथ बहन उर्मिला सिंह तथा बहन सरोज यादव ने दिया। इस कार्यक्रम में लगभग 150 साधक उपस्थित रहे।

इसके अतिरिक्त झाँसी और फर्रुखाबाद में भी जन्म महोत्सव मनाया गया।

जन्मोत्सव शिविर दिसम्बर 2024 का विवरण

साधना धाम हरिद्वार में जन्म दिवस शिविर का शुभारम्भ दिनांक 18 दिसम्बर 2024 को दोपहर बाद ड्यूटियाँ निर्धारित करने से हुआ तथा समापन दिनांक 21 दिसम्बर 2024 को प्रातःकाल के सामूहिक जाप के साथ हुआ। समापन के पश्चात् अल्पाहार के बाद बाहर जाने वाले साधकों को मार्ग का भोजन देकर विदा किया गया। शिविर का संचालन पूज्य गुरुदेव

की अध्यक्षता में सभी साधकों के सहयोग से सुचारु रूप से हुआ। तीन दिवसीय इस शिविर में तीन रातों में पूरी-पूरी रात जागकर साधकों ने अपनी-अपनी ड्यूटियों के अनुसार अखण्ड जाप किया। इस शिविर में 27 साधकों ने भाग लिया। शिविर में साधकों के जो प्रवचन हुए उनका विवरण नीचे दिया जा रहा है -

प्रवचन सार

श्री रवि कान्त शुक्ल जी

श्री शुक्ल जी ने बताया कि गीता में भगवान् ने मुख्यतः तीन योग बताये हैं - कर्म योग, ज्ञान योग व भक्ति योग अथवा ध्यान योग। पूज्य गुरु महाराज ने सभी योगों को अध्यात्म की दृष्टि से देखा है और समझाया है। ये सभी योग कर्म योग के बिना अधूरे हैं क्योंकि ज्ञान के लिये भी कर्म करना पड़ता है और भक्ति योग या ध्यान योग के लिये भी।

श्री गुरु महाराज ने समझाया है कि कर्म करने की प्रेरणा परिस्थिति के कारण होती है, जैसे अर्जुन के समक्ष युद्ध की परिस्थिति उत्पन्न हुई तो उसको युद्ध जैसा कर्म करना पड़ा। किन्तु अब उसके सामने एक विकट समस्या पैदा हो गई कि अपने सम्बन्धियों के साथ युद्ध करना उचित है कि नहीं और उसके लिये विश्लेषण की आवश्यकता पड़ी। तब भगवान् ने सांख्य योग का उपदेश देकर अर्जुन के शोक को दूर करने की चेष्टा की। विश्लेषण में अध्यात्म आ जाता है। अध्याय 2 में ही कर्म योग की आधारशिला रखी गई। वैसे तो समस्त गीता ही कर्म योग का प्रतिपाद्य विषय है।

अध्याय 3 में भगवान् ने समझाया है कि हम अपने कर्मों को योग कैसे बनायें। अध्याय 2 में भगवान् ने बताया था कि कर्म के प्रति निष्ठा अति

आवश्यक होती है। कर्म योगी फल की इच्छा से रहित होकर कर्म करता है पर सामान्य व्यक्ति कर्म से कुछ फल चाहता है। यही अन्तर है कर्म में और कर्म योग में। गुरु महाराज के शब्द हैं - हम सुख की चाह में अनजाने में ही इच्छाओं के गुलाम हो जाते हैं जो हमको काँटों में खींच ले जाती है। सुख चाहेंगे तो दुःख अवश्य मिलेगा। बुद्धिमान लोग विवेक से काम लेते हैं और कर्मों से उत्पन्न होने वाले फल को त्याग कर बन्धन से मुक्त हो जाते हैं। इसलिये बुद्धि कर्म से ऊपर की वस्तु है। अब अर्जुन प्रश्न करता है कि यदि बुद्धि कर्म से श्रेष्ठ है तो आप मुझे इस युद्ध रूपी घोर कर्म में क्यों प्रेरित कर रहे हैं। इसके उत्तर में भगवान् ने बताया कि कर्म तो करना ही होगा। बिना कर्म के तो मनुष्य रह ही नहीं सकता। हम कुछ नहीं करते हैं तो भी कर्म तो होता ही रहता है। तो प्रश्न हुआ कि कर्म कैसे करना चाहिए। उत्तर मिला कि कर्म को यज्ञ की भावना से करना चाहिए अर्थात् बिना फल की इच्छा के, बिना आसक्ति के करना चाहिए। इस प्रकार का कर्म यज्ञ हो जाता है और ऐसा कर्म कोई दोष उत्पन्न नहीं करता; बल्कि ऐसा कर्म भगवान् की पूजा हो जाती है। इस यज्ञ के विपरीत किया गया कोई भी कार्य बन्धन बन जाता है।

यज्ञ व्यष्टि और समष्टि, दोनों के लिये कल्याणकारी है। इसका अर्थ है कि हम जो कुछ करते हैं वह अपने लिये ही नहीं करते, समाज के लिये भी करते हैं। किसान फसल अपने लिये ही नहीं उगाता, जुलाहा कपड़ा अपने लिये ही नहीं बुनता, मिस्त्री मकान अपने लिये ही नहीं बनाता। स्पष्ट है कि कर्म करना व्यष्टि और समष्टि, दोनों के लिये ही अनिवार्य है। हम समाज के लिये कार्य करते हैं और समाज हमारे लिये कार्य करता है। इसी प्रकार सारी सृष्टि चलती है।

यज्ञ का अर्थ गुरु महाराज ने समझाया है – त्याग करना, मिटा देना अपने को दूसरों के लिये और यह प्रभु की सजीव उपासना है। यही सिद्धान्त कर्म को योग बना देता है, प्रभु से हमें जोड़ देता है। यज्ञार्थ कर्म अकर्म बन जाता है क्योंकि वह प्रभु को अर्पण हो जाता है, उसके संस्कार नहीं बनते हैं। इस विषय में राजा जनक का उदाहरण दिया जाता है। वह सब कुछ करते हुए, विशाल राज्य को संभालते हुए भी विदेह कहलाते थे।

श्री योगेन्द्र पाण्डेय जी

श्री योगेन्द्र पाण्डेय जी ने सर्वप्रथम पुराणों के कुछ अंश सुनाये। उसके बाद श्री दीनानाथ जी 'दिनेश' द्वारा रचित श्री हरि गीता से अध्याय 13 व अध्याय 18 के कुछ अंशों का मधुर स्वर में गायन किया व अर्थ समझाया। अन्त में श्रीरामचरितमानस से भगवान् राम व लक्ष्मण का वह संवाद सुनाया जिसमें लक्ष्मण ने ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, माया, जीव व ईश्वर का भेद जानने की जिज्ञासा प्रकट की थी और जिसके उत्तर में भगवान् ने सब समझाने के बाद भक्ति को सरल व सर्वश्रेष्ठ बतलाया था।

बहन रमना सेखड़ी जी

बहन जी ने अपने प्रवचन में गीता के अध्याय 2 के उस भाग की व्याख्या की जिसका उच्चारण

हम लोग गीता के सत्र में प्रतिदिन करते हैं, अर्थात् स्थित प्रज्ञ के लक्षण –

श्लोक 54 में अर्जुन भगवान् से स्थित प्रज्ञ के लक्षणों के विषय में जिज्ञासा करता है। उसके उत्तर में भगवान् श्लोक 55 में कहते हैं – **आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते**। अर्थात् जब मनुष्य जितना उसके पास है उतने में ही सन्तुष्ट रहना सीख लेता है, यह समझ लेता है कि जो प्राप्त है वही पर्याप्त है, तभी वह स्थित प्रज्ञ हो सकता है। इस विषय में जो कुछ पूज्य गुरु महाराज अपनी पुस्तक 'गीता विमर्श' में लिखा है उसे पढ़कर समझाया। 'साधना और व्यवहार' नामक पुस्तक में समझाया गया है कि व्यक्ति में तीन ऐषणाएँ बड़ी प्रबल होती हैं जो उसके मन को मथ डालती हैं – पुत्रैषणा, वित्तैषणा और लोकैषणा। प्रथम दो ऐषणाओं की पूर्ति तो जैसे-तैसे कर भी लेता है किन्तु लोकैषणा की पूर्ति बड़ी कठिन है।

बदला लेने की भावना भी बड़ी प्रबल होती है। किसी ने यदि हमारे साथ कोई दुर्व्यवहार कर दिया है तो बहुत लम्बे समय तक बदला लेने की भावना हमें कचोटती रहती है। इस प्रकार की कामना व्यक्ति को बहुत नीचे गिरा देती है। मनोगत कामनाएँ व्यक्ति की बुद्धि पर पर्दा डाल देती हैं। उस कामना की पूर्ति के साधन उसे प्रिय लगने लगते हैं। उस कामना की पूर्ति में यदि कोई रुकावट आती है तो लगता है कोई दूसरा उसमें बाधा डाल रहा है और उस पर क्रोध आने लगता है; वास्तविकता तो दिखती ही नहीं है। इच्छा जागने के साथ ही मन में बेचैनी होने लगती है। ऐसा तब तक होता रहेगा जब तक हम अपने आप में सन्तुष्ट नहीं होंगे। परमात्मा तो अपने अन्दर ही है, तो अन्दर ही उसके दर्शन करने हैं।

आगे स्वामी जी लिखते हैं – क्या कामना का अभाव आवश्यक है बुद्धि की स्थिरता के लिये? उसके उत्तर में कहते हैं कि कामना के बिना तो

जीवन ही सूना है। कामना होनी चाहिए किन्तु उतनी ही जितनी आवश्यक है। यदि कामना नहीं होगी तो मनुष्य का जीवन पशु के सदृश हो जायेगा। कामना के उदय होने से ही तो मनुष्य पशु से मनुष्य बना। पर मनुष्य बनाकर भगवान् ने हमें बुद्धि भी तो दी है जिससे कि हम विवेकपूर्वक कामना कर सकें।

स्वामी जी ने यह भी कहा है कि कामना की पूर्ति से जहाँ हमें सुख की प्राप्ति होती है वहीं दुःख भी होता है। अतः हमें दुःख भोगने के लिये भी तैयार रहना चाहिए। सुख की प्रतीति तो मन से होती है। यदि हमारा मन दुःखी है तो इन्द्रियों का विषयों के साथ संयोग होने से भी हम सुखी नहीं हो सकते, मनचाही वस्तु प्राप्त होने से भी सुखी नहीं हो सकते। इसीलिये कहा गया है कि जिसकी चेतना आत्मा में प्रतिष्ठित हो गई हो, वही स्थित प्रज्ञ हो सकता है।

श्री विष्णु कुमार जी गोयल

पूज्य स्वामी जी द्वारा रचित 'गीता विमर्श' के आधार पर गीता के अध्याय 3 के श्लोक 9 व 10 की व्याख्या करते हुए समझाया कि भगवान् ने अर्जुन को बताया कि कर्म करना तो आवश्यक है परन्तु वे कर्म यज्ञ के निमित्त तथा आसक्ति से रहित होकर करने चाहिए। अर्जुन को लग रहा था कि अपने सगे सम्बन्धियों को मारने से पाप लगेगा। भगवान् कहते हैं कि इसका कारण आसक्ति है। आसक्ति छोड़कर कर्म करने से पाप नहीं लगेगा।

श्लोक 10 व उसके बाद वाले श्लोकों में भगवान् ने समझाया कि कर्म करना अति आवश्यक है क्योंकि बिना कर्म के तो सृष्टि चल ही नहीं सकती। इसीलिये, प्रजापति ब्रह्मा ने कल्प के आदि में प्रजा के साथ-साथ यज्ञ की भी रचना की और प्रजाओं को कहा कि तुम लोग इस यज्ञ के द्वारा देवताओं को उन्नत करो और इसके बदले में देवता तुम लोगों को पुष्टि प्रदान करें। यज्ञ का अर्थ है

शास्त्रों के अनुसार कर्तव्य कर्मों को करना। कर्म न करने से तो सृष्टि चक्र ही रुक जायेगा। हम जो भोजन करते हैं उसमें कितने ही लोगों का योगदान होता है। किसान खेत में बीज बोता है, हल चलाता है। हल को बनाने में भी कितने लोगों का योगदान लगता है। इसी प्रकार मकान बनाने में, कपड़ा बनाने आदि सभी वस्तुओं में, समाज का योगदान होता है। इस प्रकार पूरा समाज व्यक्ति पर और व्यक्ति पूरे समाज पर आधारित है। यहाँ तक कि पशु पक्षियों, कीड़े मकोड़ों, पेड़ पौधों और सभी जीव जन्तुओं का भी सृष्टि को चलाने में योगदान होता है।

इन कारणों से यदि कोई व्यक्ति अपना कर्तव्य कर्म नहीं करता तो वह पाप का भागी होता है। भगवान् ने चार वर्णों में समाज को विभाजित किया जिससे कि सभी कार्य सुचारु रूप से चलते रहें। अर्जुन को कहते हैं — तू क्षत्रिय है, तेरा कर्तव्य युद्ध करना है। यदि तू युद्ध से भागेगा तो कायर कहलायेगा। अतः तू युद्ध को यज्ञ समझकर कर, फिर तुझे पाप नहीं लगेगा।

श्री पुरिन्दर तिवारी जी

हमारे पूज्य गुरुदेव स्वामी रामानन्द जी का जो साहित्य है वह हमारे लिये वेदों, पुराणों, उपनिषदों, गीता, रामायण आदि समस्त ग्रन्थों से ऊपर है। गुरुदेव के साहित्य का एक-एक शब्द इतना मूल्यवान है कि न वो हटाया जा सकता है और न बदला जा सकता है। उदाहरण के लिये, गुरु महाराज ने लिखा है कि 'हम भगवान् के पुत्र हैं; अनन्त शक्ति ही हमारा दायद है।' इस वाक्य को समझने की, इसकी गहराई में जाने की आवश्यकता है। गुरुदेव कहना चाहते हैं कि यदि हम इस बात को समझ लें कि हम भगवान् के पुत्र हैं तो हम उन सभी शक्तियों के अधिकारी हो जाते हैं जो भगवान् की हैं। और भगवान् की शक्ति तो अनन्त है तो हम भी अनन्त शक्ति के अधिकारी हुए।

हमारी स्थिति क्या है? हमारी दृष्टि रहती है सांसारिक सुखों की ओर, और हम उसी में उलझे रह जाते हैं। यद्यपि वे सुख भी भगवान् के ही दिये हुए हैं किन्तु उनमें उलझे रहने के कारण हम भगवान् की उच्चतम सम्पत्ति से वंचित रह जाते हैं। जैसे ही हम भगवान् के रास्ते पर बढ़ने लगते हैं, हमें सिद्धियाँ प्राप्त होने लगती हैं और हम उन्हीं को पाकर अपने को भगवान् के समकक्ष समझ बैठते हैं जबकि वास्तव में वे बहुत निम्न स्तर की उपलब्धियाँ हैं – ऐसा गुरुदेव ने लिखा है। हम भूल जाते हैं कि दिव्यत्व हमारा सुनिश्चित भविष्य है।

यह सही है कि वहाँ तक पहुँचने के लिये बहुत संघर्ष करना पड़ेगा, किन्तु भविष्य में यदि दिव्यत्व की प्राप्ति करनी है तो वर्तमान में संघर्ष उसके लिये स्वाभाविक पथ है। संघर्ष के बिना तो दिव्यत्व की प्राप्ति असम्भव है। बिना संघर्ष के भला किसने दिव्यत्व प्राप्त किया है। श्री राम ने जीवन भर संघर्ष किया था तभी वह भगवान् बने थे। श्री कृष्ण ने जन्म लेते ही संघर्षों का सामना किया था और अन्त तक करते रहे थे। भगवान् बुद्ध ने कितने कष्ट झेले थे। लगभग सभी अवतारों में भगवान् ने संघर्ष करना सिखाया। वर्तमान में भी जितने महापुरुष हुए हैं, उन सभी ने संघर्षपूर्ण जीवन जिया है; तभी वे दुनिया के समक्ष आदर्श प्रस्तुत कर सके।

तात्पर्य यह है कि गुरुदेव के साहित्य में सभी कुछ है और सभी साहित्य साधना धाम में निःशुल्क उपलब्ध भी है। आवश्यकता है उसको समझने की और जीवन में उतारने की। सारे साहित्य की भी आवश्यकता नहीं है; किसी भी पुस्तक का एक वाक्य भी यदि हम अपने जीवन में उतार लें तो पूरा जीवन बदल सकता है।

बहन सुनीता रघुवंशी जी

व्यावहारिक साधना के सत्र में बहन सुनीता जी ने अपने जीवन के अनुभव साझा किये, जिसमें

उन्होंने बताया कि वह जब भी साधना धाम आती थीं तो सुनने को मिलता था कि जो कुछ भी तुम करो भगवान् के लिये करो। इस बात को जीवन में उतारने में उन्हें 15 वर्ष लग गये। लेकिन अब उन्होंने पूरी तरह से सीख लिया है। अब तो वह हर स्थान पर, हर समय में गुरु महाराज को अपने सामने पाती हैं, घर से निकलते और प्रवेश करते समय भी गुरु महाराज से बातें करती रहती हैं। सब काम करते-करते भी गुरु जी को साथ रखती हैं। नहाते समय सोचती हैं कि यह शरीर आपका मन्दिर है, मैं इस को साफ कर रही हूँ, भोजन करते हुए भी कहती हैं कि भगवान् मैं आपको ही खिला रही हूँ। इसी प्रकार कई बार बोलकर भी गुरु जी से बातें करती हैं। इस प्रकार उन्होंने अब हर परिस्थिति में प्रसन्न रहना सीख लिया है।

बहन मीरा दुबे जी

भक्ति का एक अति आवश्यक लक्षण है सरलता – पूर्णतः छल, कपट, चतुराई से रहित जैसे छोटा बच्चा होता है। हम यहाँ साधना धाम में प्रति वर्ष 16 दिसम्बर को श्री गुरु महाराज का जन्मदिन मनाने के लिये आते हैं, परन्तु महाराज का एक और जन्मदिन भी होता है और वह है 17 नवम्बर 1940, जिस दिन गुरु महाराज ने घर छोड़कर संन्यास लिया था। उसी दिन से स्वामी जी ने जन-कल्याण का व्रत लिया था जिसके फलस्वरूप आज लाखों लोग लाभान्वित हो रहे हैं। श्री गुरु महाराज ने हमें भक्ति का मार्ग दिखाया, समर्पण का मार्ग दिखाया। समर्पण का अर्थ बताया कि जो कुछ है सब भगवान् का है, मान अपमान सब उसी का है, मेरा कुछ भी नहीं है। हमारा उद्देश्य होना चाहिए भगवान् को पाने का, और पाने के लिये निःस्वार्थ प्रेम चाहिए भगवान् से, केवल प्रेम, उसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं। उसके लिये चाहिए सतत स्मरण, सतत चिन्तन, सतत मनन। प्रेम होना चाहिए गोपियों

की तरह।

दूसरा है इन्द्रियों का समर्पण। फिर है अपनों का समर्पण। दुनिया में कोई अपना है तो केवल भगवान्, उसके अतिरिक्त कोई नहीं। यहाँ तक कि अपने सब काम भी भगवान् के समझो।

श्री अजय अग्रवाल जी

संसार का हर प्राणी सुख की इच्छा रखता है और यह भी कि सुख स्थाई हो; किन्तु विडम्बना यह है सुख स्थाई कभी होता ही नहीं, क्योंकि हर सुख के साथ दुःख लगा हुआ है। यही सृष्टि का नियम है। इस विषय में मेरी यह सोच है कि यदि स्थाई सुख चाहते हैं तो हमें कर्म में ही सुख ढूँढना होगा। हम सुख ढूँढते हैं कर्म के फल में और फल हमारे हाथ में है नहीं। इसका उपाय यह है कि कर्म के करते समय सुख का अनुभव करें। मान लीजिये हम किसी कारणवश भोजन करने में असमर्थ हैं तो हमें चाहिए कि हम दूसरों को खिलाने में ही सुख महसूस करें और ईश्वर का धन्यवाद करें कि उसने हमें खिलाने योग्य बनाया।

अब प्रश्न उठता है कि कौन से कर्म करें जिससे हमें सुख मिले। कुछ लोगों का मानना है कि सभी कर्म तो ईश्वर की इच्छा से होते हैं, हम तो कुछ करते ही नहीं हैं। जबकि वास्तविकता यह है कि भगवान् की सृष्टि में बुरा कुछ है ही नहीं, सब कुछ अच्छा ही अच्छा है। कोई कह सकता है कि क्रोध, ईर्ष्या आदि के भाव तो खराब ही हैं, फिर भगवान् ने उन्हें बनाया ही क्यों? यदि गहराई से सोचा जायेगा तो क्रोध भी आवश्यक है क्योंकि यदि राम क्रोध नहीं करते तो राक्षसों का वध कैसे करते। इसी प्रकार ईर्ष्या भी आवश्यक है क्योंकि यदि ईर्ष्या न होती तो मनुष्य उन्नति ही नहीं करता। हाँ, इतना अवश्य है कि ईर्ष्या के कारण हम किसी का बुरा न करें। यही बात प्रेम के साथ है। आवश्यकता इस बात की है कि हम इन सब भावों का उपयोग

सही मात्रा में और सही स्थान पर करें।

एक विशेष बात यह भी है कर्म करते हुए हमारा मन कैसा है। यदि मन शुद्ध नहीं होगा तो कर्म अच्छा होने पर भी वह परिणाम में सुखदायी नहीं होगा क्योंकि कर्म मन से भी होता है।

श्री अनिल मित्तल जी

प्रत्येक व्यक्ति सुख चाहता है, परन्तु वो यह नहीं जानता कि सुख के साथ में दुःख भी लगा हुआ है। साधारणतः व्यक्ति सुख के लिये दिन रात प्रयत्न करता रहता है यह सोचकर कि यदि उसके पास अधिक धन सम्पत्ति होगी तो वह अधिक सुखी हो जायेगा। धन के उपार्जन का एक उद्देश्य यह भी होता है कि उसको पॉवर या अधिकार मिल जायेंगे, समाज में उनका आदर सत्कार बढ़ जायेगा, बहुत से नौकर चाकर होंगे, बंगला होगा, गाड़ियाँ होंगी आदि आदि। उससे उनका अहंकार इतना बढ़ जाता है कि वही स्थिति उन्हें प्रिय लगने लगती है। उसके लिये दुःख भी सहने को तैयार रहते हैं, वो दुःख उनको दुःख ही नहीं लगता। आध्यात्मिक दृष्टि से इसको कहा जाता है कि जो नाली का कीड़ा होता है वो नाली में रहकर ही खुश रहता है, वह उसमें से निकलना ही नहीं चाहता।

ऐसे व्यक्तियों के जीवन में एक समय आता है जब उनको अन्दर से कुछ खालीपन लगने लगता है, यदि उनमें ऐसे संस्कार होंगे तो। यदि भगवान् की कृपा उस पर हो जाती है तो उसको सहसा अहसास होता है कि जितना धन उपार्जन किया है वह सब किसी काम का नहीं है। जितना समय उसका उपार्जन करने में लगाया वह सब व्यर्थ कर दिया। तब वह शान्ति की खोज करने लगता है और जब कोई अप्रत्याशित घटना घट जाती है तब उसके भीतर अभीप्सा जागृत होती है; वह आध्यात्मिकता की ओर बढ़ने की इच्छा करने लगता है। तब उसे एक मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है।

फिर वह गुरु की खोज में निकलता है किन्तु उसे सही गुरु तभी मिलेगा जब वह पिछले संस्कारों के बल पर किसी तत्वदर्शी गुरु के कोटे में होगा। हम सभी साधकगण तो अत्यन्त भाग्यशाली हैं जो उच्चतम सन्त के कोटे में आ गये हैं। ऐसी स्थिति में हमारा यह पावन कर्तव्य है कि यहाँ आकर हम अपना पूरा का पूरा समय इसी काम में लगायें जिसके लिये हम यहाँ आये हैं। हमारा मुख्य कार्य है ध्यान। ध्यान के साथ में व्यावहारिक साधना भी उतनी ही आवश्यक है। हमें चेष्टा करनी है कि बुरी वृत्तियाँ नष्ट हो जायें। इसका उपाय है सतत् स्मरण।

ध्यान के लिये मौन भी बहुत आवश्यक है।

मौन का बहुत महत्व है। कुछ पद्धतियों में तो मौन ही ईश्वर प्राप्ति का साधन बताया गया है। मौन से व्यक्ति अन्तर्मुखी हो जाता है जिससे अपने अन्दर ही ईश्वर की झलकियाँ दिखने लगती हैं, शान्ति का अनुभव होने लगता है। हमारे विचार ही संसार हैं और शून्य परमात्मा है। मौन से हममें अपने अन्दर झाँकने की क्षमता प्राप्त हो जाती है जिससे अपने दोष दिखने लगते हैं और धीरे-धीरे हम दोष रहित होने लगते हैं। ध्यान की स्थिति में यदि हम विचार-शून्य हो जाते हैं तो वही वास्तव में ध्यान की स्थिति है। गहरे ध्यान में उतरते ही हमें आनन्द की अनुभूति होने लगती है। आनन्द और प्रेम ही तो भगवान् हैं।

अष्टांग योग

अष्टांग योग, पतंजलि के योग सूत्रों में योग के वर्गीकरणों में से एक है। यह प्राचीन योग परम्पराओं पर आधारित है। अष्टांग योग के आठ अंग ये हैं :-

- यम (संयम)
- नियम (पालन)
- आसन (योग मुद्राएँ)
- प्राणायाम (श्वास नियन्त्रण)
- प्रत्याहार (इन्द्रियों को वापस खींचना)
- धारणा (एकाग्रता)
- ध्यान (ध्यान)
- समाधि (अवशोषण)



- अष्टांग योग, आध्यात्मिक विकास के लिये एक व्यापक रूपरेखा है।
- यह शारीरिक आसन, श्वास नियन्त्रण, और ध्यान को जोड़ता है।
- अष्टांग योग के अभ्यास से शारीरिक जीवन शक्ति, मानसिक स्पष्टता, और आध्यात्मिक विकास होता है।
- अष्टांग योग के अभ्यास से आत्म-निरीक्षण गहरा होता है और सच्चे स्व के साथ एकरूपता आती है।
- अष्टांग योग के अभ्यास से आत्म-खोज और आन्तरिक शान्ति की भावना बढ़ती है।
- अष्टांग योग के अभ्यास में निरन्तरता और समर्पण व्यक्तिगत और आध्यात्मिक विकास के लिये मददगार होता है।

कार्यकारिणी की बैठक का विवरण

दिनांक 18 दिसम्बर 2024, बुधवार को साधना धाम हरिद्वार के कार्यालय में कार्यसमिति की बैठक प्रातः 11:00 बजे श्री विष्णु कुमार जी गोयल की अध्यक्षता में हुई। बैठक में निम्नलिखित सदस्य उपस्थित रहे –

1. श्री विष्णु कुमार गोयल अध्यक्ष
2. श्री अनिल चन्द्र मित्तल उपाध्यक्ष
3. श्रीमती रमना सेखड़ी सचिव
4. श्री रवि कान्त भण्डारी प्रबन्धक
5. श्री सुधीर कान्त अग्रवाल सदस्य
6. श्री रमेश जायसवाल सदस्य
7. श्री हरपाल सिंह राजपूत सदस्य
8. श्रीमती रेवा भाम्बरी सदस्य
9. श्रीमती कृष्णा भण्डारी सदस्य
10. श्री पुरिन्दर तिवारी सदस्य
11. श्रीमती हर्ष कपूर वि. आ. सदस्य
12. श्री संजय सेखड़ी वि. आ. सदस्य

पूज्य गुरुदेव की वन्दना के बाद बैठक की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। सर्वप्रथम दिनांक 20.7.2024 को आयोजित पिछली बैठक की कार्यवाही समस्त उपस्थित सदस्यों को पढ़कर सुनाई गई। सभी सदस्यों ने कार्यवाही का अनुमोदन किया। इसके पश्चात् कार्यसूची के अनुसार निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार विमर्श करके निर्णय लिये गये –

1. दिगोली तपस्थली में निर्माण कार्य की प्रगति पर प्रकाश डालते हुए माननीय अध्यक्ष जी ने बताया कि वहाँ का ठेकेदार बार-बार पैसों की रमना सेखड़ी, सचिव

माँग कर रहा है और निर्माण कार्य में उचित प्रगति नहीं दी जा रही है। अतः समस्त उपस्थित सदस्यों ने विचार विमर्श करके यह निर्णय लिया कि इस कार्य को और अधिक न खींचते हुए माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री अनिल मित्तल जी, श्री राजीव रतन जी व अन्य विशेषज्ञ व्यक्तिगत रूप से ठेकेदार से विचार-विमर्श करके एक मुश्त समाधान निकालें। इस कार्य के लिये 15 जनवरी तक का समय दिया गया।

2. साधना धाम हरिद्वार में मरम्मत एवं निर्माण कार्य की समीक्षा करते हुए प्रबन्धक श्री रवि कान्त भण्डारी जी ने बताया कि विद्युत् लोड 20 KW करवाने का प्रयास किया जा रहा है तथा 30 अतिरिक्त गीजर धाम में लगवा दिये गये हैं। माननीय सदस्यों ने सर्वसम्मति से इन कार्यों का अनुमोदन किया।
3. धाम के वातावरण को साधनामय बनाने हेतु सदस्यों द्वारा दिये गये सुझावों पर चर्चा हुई।
4. चिकित्सालय में फिजियोथेरेपी की मशीनें लगवा दी गई हैं।
5. इसके पश्चात् हमारे साधक श्री प्रशान्त रस्तोगी जी, निवासी बीसलपुर के 15 जुलाई 2024 को हुए देहावसान पर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। बैठक के अन्त में माननीय अध्यक्ष जी ने सहयोग के लिये समस्त सदस्यों का आभार व्यक्त किया। इसके बाद पूज्य गुरुदेव को भोग लगाकर बैठक की पूर्ति की गई।

विष्णु कुमार गोयल, अध्यक्ष

अनमोल बोल

मीठा बोलने वाले का कोई शत्रु नहीं होता।

हम कानों से सदा अच्छी बातें सुनें।

❖ ❖ ❖

❖ ❖ ❖

हम सब एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें।

रोगों की बढ़ोत्तरी में चिन्ता और शोक सबसे बड़ा कारण हैं।

❖ ❖ ❖

❖ ❖ ❖

10.11.24 से 02.03.25 तक के 2100/- से ऊपर दानदाताओं की सूची

साधकगण अपने दान की राशि बैंक द्वारा निम्नलिखित बैंक खातों में जमा करवा सकते हैं।

Swami Ramanand Sadhna Pariwar
BANK OF INDIA,
Haridwar
 A/c No.: 721010110003147
 I.F.S. Code: BKID0007210

Swami Ramanand Sadhna Pariwar
HDFC BANK,
Bhoopatwala, Saptrishi Chungi, Haridwar
 A/c No.: 50100537193693
 I.F.S. Code: HDFC0005481

साधना धाम का PAN नम्बर AAKAS8917M है।

कृपा करके जमा करवाई हुई राशि का विवरण एवं अपना नाम और पता तथा PAN या आधार कार्ड नम्बर, पत्र, फोन, E-mail अथवा WhatsApp द्वारा साधना धाम कार्यालय में अवश्य सूचित करें। जिससे आपको रसीद आसानी से प्राप्त हो जायेगी।

- रवि कान्त भण्डारी, प्रबन्धक, साधना धाम, मोबाइल: 09872574514, 08273494285

1	राजेश गुप्ता, नई दिल्ली	1,00,000	21	सतीश खोसला, दिल्ली	10,000
2	सतीश खोसला, नई दिल्ली	80,000	22	सुनीता कपूर, दिल्ली	10,000
3	कांता अमर	50,278	23	विष्णु/सुशीला जयसवाल, मुम्बई	10,000
4	राजेश गुप्ता, नई दिल्ली	50,001	24	अजय कुमार अग्रवाल, बरेली	10,000
5	आर.के. मेहरोत्रा, गुरुग्राम	50,000	25	डॉ. आकांक्षा अग्रवाल, मेरठ	8,000
6	सुनीता कपूर, दिल्ली	31,000	26	कुमकुम त्रिपाठी, लखनऊ	6,000
7	विजया हिंदुजा, दिल्ली	31,000	27	वेद प्रकाश शर्मा, गुरुग्राम	5,100
8	हितेश भण्डारी, लुधियाना	31,000	28	देवेन्द्र पॉल, जयपुर	5,100
9	दिसम्बर शिविर कलेक्शन, हरिद्वार	20,000	29	गौरी राज लक्ष्मी, गोंडल, गुजरात	5,100
10	राधा त्रिपाठी	18,501	30	आनन्द गुप्ता, कानपुर	5,100
11	सुनील शर्मा, बैंगलूरु	11,000	31	प्रतिभा गुप्ता (स्व. प्रभा गुप्ता), कानपुर	5,100
12	देवांग बहल, गुरुग्राम	11,000	32	हरपाल सिंह राजपूत, कनखल	5,100
13	अविनाश मिश्रा, सेंथल	11,000	33	मधु खुल्लर, गुरुग्राम	5,100
14	राकेश कुमार अग्रवाल, दिल्ली	11,000	34	करण कपूर, गुरुग्राम	5,100
15	ज्ञानवती शुक्ला, कानपुर	11,000	35	अनुज गुप्ता, अलवर	5,100
16	सुधा आहूजा, दिल्ली	11,000	36	गौतम सक्सैना, लखनऊ	5,100
17	रीवा भांबरी, नई दिल्ली	11,000	37	डॉ. कमलदीप सिंह, शाहजहाँपुर	5,100
18	श्वेता भण्डारी/गुप्ता	11,000	38	सुधीर अग्रवाल, मेरठ	5,100
19	शिवम अग्रवाल, फरीदाबाद	11,000	39	मोहन राम अग्रवाल, बैंगलूरु	5,100
20	सचिन अग्रवाल, फरीदाबाद	11,000			

(शेष अगले पृष्ठ पर...)

(10.11.2024 से 02.03.2025 तक के दानदाताओं की सूची पिछले पृष्ठ से ...)

40	सावित्री देवी (छोटे लाल की स्मृति में), बीसलपुर	5,100	69	सुधीर कान्त अग्रवाल, मेरठ	3,000
41	चन्द्र प्रकाश गुप्ता, बरेली	5,100	70	हरिओम सत्संग (एलपीजी के लिए)	2,700
42	सी.बी. गुप्ता, नई दिल्ली	5,100	71	हरिओम सत्संग (एलपीजी के लिए)	2,700
43	अनिरुद्ध/राखी अग्निहोत्री, रूड़की	5,100	72	विजय कुमार बहल, मेरठ	2,500
44	राजेश गुप्ता/अनुराधा गर्ग, दिल्ली	5,000	73	मनोज गुप्ता/साधना गुप्ता, बीसलपुर	2,500
45	राजेश गुप्ता/हिमालय राजेश प्रकाश, दिल्ली	5,000	74	डॉ. कुलदीप सिंह, शाहजहाँपुर	2,500
46	सुधीर कान्त अग्रवाल, मेरठ	5,000	75	प्रतीक दीक्षित, नोएडा	2,500
47	हरपाल सिंह राजपूत, हरिद्वार	5,000	76	अशोक कुमार सिंह, कानपुर	2,100
48	रचित भाटिया/अनिरुद्ध भाटिया, मेरठ	5,000	77	राजेश गुप्ता, दिल्ली	2,100
49	धर्मेन्द्र सिंह, सिद्धार्थनगर	5,000	78	प्रमोद मिश्रा, अहमदाबाद	2,100
50	जगदीप तिवारी, कानपुर	5,000	79	हरीश चन्द्र रस्तोगी, बीसलपुर	2,100
51	रितिका हाण्डा	5,000	80	सुरेन्द्र कुमार/राधा अग्रवाल, बीसलपुर	2,100
52	सन्तोष अग्रवाल, कोटद्वार	4,200	81	प्रदीप अग्रवाल पुत्र स्व. कैलाश चन्द्र अग्रवाल, बीसलपुर	2,100
53	आनन्द कुमार अग्निहोत्री, लखनऊ	4,004	82	छाया मिश्रा, नोएडा	2,100
54	विष्णु कुमार अग्रवाल, बरेली	4,001	83	अरविन्द पोद्दार, आगरा	2,100
55	स्व. आर.के. मेहरोत्रा, गुरुग्राम	3,600	84	योगेश कुमार, बीसलपुर	2,100
56	राजेश सेठ	3,200	85	मोहित मित्तल, बीसलपुर	2,100
57	सीमा शर्मा, परागपुर, कांगड़ा (हि.प्र.)	3,100	86	तोष अग्रवाल, दिल्ली	2,100
58	अंशुल, दिल्ली	3,100	87	अभिनन्दन दीक्षित, कानपुर	2,100
59	जी.डी. बहल, दिल्ली	3,100	88	महेन्द्र प्रताप सिंह, कानपुर	2,100
60	नीता सहगल, दिल्ली	3,100	89	अनिल कुमार अग्रवाल, बरेली	2,100
61	कमल शर्मा, लुधियाना	3,100	90	राजीव रतन सिंह, हरिद्वार	2,100
62	शोभा सोबती, चण्डीगढ़	3,100	91	प्रभात कुमार सक्सेना, लखनऊ	2,100
63	राहुल भण्डारी, जालन्धर	3,100	92	विनय शर्मा, कानपुर	2,100
64	राजेन्द्र चन्देल, दिल्ली	3,100	93	रविकान्त भण्डारी, लुधियाना	2,100
65	आकांक्षा अग्रवाल, मेरठ	3,100	94	स्व. अमित मिश्रा, सेंथल	2,100
66	उषा सेठ, गुरुग्राम	3,100	95	हाण्डा परिवार, पुणे	2,100
67	अनिल चन्द्र मित्तल, बीसलपुर	3,100	96	स्व. सुनील अग्रवाल, पीलीभीत	2,100
68	उमा शुक्ला	3,100	97	अंकुर अग्रवाल, दिल्ली	2,100

(शेष अगले पृष्ठ पर...)

(10.11.2024 से 02.03.2025 तक के दानदाताओं की सूची पिछले पृष्ठ से ...)

98 संजय अग्रवाल, फरीदाबाद	2,100	109 विष्णु कुमार अग्रवाल, बरेली	2,100
99 रेनू आहूजा/पूनम, दिल्ली	2,100	110 नीता सहगल, नई दिल्ली	2,100
100 राम सिंह उपाध्याय, हरिद्वार	2,100	111 सूरजभान सक्सैना, कानपुर	2,100
101 दिनेश कुमार अग्रवाल, सिलीगुड़ी	2,100	112 सूरजभान सक्सैना, कानपुर	2,100
102 चन्द्र प्रकाश गुप्ता, बरेली	2,100	113 अतुल मोहन आहूजा	2,100
103 सुधीर कान्त अग्रवाल, मेरठ	2,100	114 सुधीर कान्त अग्रवाल, मेरठ	2,100
104 सूरजभान सक्सैना, कानपुर	2,100	115 गुप्तदान	3,64,100
105 नीता सहगल, नई दिल्ली	2,100	नोट: खेद है कि रु. 2,100/- या अधिक राशि के कुछ दान ऐसे प्राप्त हुए हैं जिनके नाम की जानकारी न होने के कारण इस सूची में शामिल नहीं किये गये हैं।	
106 चन्द्र प्रकाश गुप्ता, बरेली	2,100		
107 सुधीर सक्सैना, कानपुर	2,100		
108 सूरजभान सक्सैना, कानपुर	2,100		

शोक समाचार

समस्त साधना परिवार को अत्यन्त दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि निम्नलिखित साधक/साधिकाओं ने अपनी नश्वर देह को त्यागकर गुरुधाम में प्रस्थान किया -

दिनांक 15 जुलाई, 2024 को बीसलपुर निवासी श्री प्रशान्त रस्तोगी जी का देहावसान हो गया है। अपने पुत्र की स्मृति में श्री हरिश्चन्द्र रस्तोगी ने 2,100/- रुपये की धनराशि धाम के लिये गुरु चरणों में समर्पित की है। परम कृपालु परमात्मा, पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों में स्थान एवं शोक सन्तप्त परिजनों को यह दुःख सहने की शक्ति दें। ॐ शान्ति!!



बीसलपुर निवासी एवं साधना धाम के परम आदरणीय, परम स्नेही, परम पूज्यनीय श्री ओमकार उर्फ छोटेलाल जी दिनांक 23 जनवरी, 2025 को सुबह 11:00 बजे अपना पंच भौतिक शरीर छोड़कर श्री गुरु महाराज जी के चरणों में जा विराजे हैं। अपने पति की स्मृति में श्रीमती सावित्री देवी ने 5,100/- रुपये की धनराशि धाम के लिये गुरु चरणों में समर्पित की है। परम कृपालु परमात्मा, पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों में स्थान एवं शोक सन्तप्त परिजनों को यह दुःख सहने की शक्ति दें। ॐ शान्ति!!



ईश्वर को सिर्फ पाप नहीं, हमारे पुण्य भी चाहिए

दिल में समर्पण का भाव आते ही भक्त जान जाता है कि अब तीर्थ करने, कहीं जाने की जरूरत नहीं रह गई। अब मेरा दिल ही तीर्थ हो चुका है। जब अविद्या और अज्ञान मन से दूर हो गये तो बाहर जाकर किस गंगा में डुबकी लगाऊँ? जो ज्ञान की गंगा दिल में बह रही है, इसी में सुस्नात होकर पवित्र हो गया हूँ। कबीर साहिब का वचन है –

**कबीरा मन निर्मल भया जैसे गंगा नीर,
पाछे लाग्यो हरि फिरे कहत कबीर कबीर।**

मन की यह निर्मलता तभी आती है, जब हम सम्पूर्णता से समर्पण कर पाते हैं। याद रहे, समर्पण करते समय ईश्वर को सिर्फ अपने पाप ही चढ़ाने से काम नहीं बनेगा। समर्पण पूर्णरूप से तभी होता है, जब हम अपने पुण्य भी चढ़ाते हैं। अपने पाप-पुण्य, गुण-अवगुण, सब कुछ चढ़ाकर निर्भर, बोझरहित हो जायें। फिर जो हो सो हो।

दीया जले अगम का बिन बाती बिन तेल।

अगम की दिव्य सूरत अब मेरे दिल में ही जगमगा रही है और अब उस आनन्दकन्द के आनन्द का अमृत मेरे मन के कोने-कोने में बरस रहा है। वेद की ऋचाएं गाती हैं कि प्रभु मेरे ही मन के मूल में हैं। परम चेतन, आनन्द घन मेरे ही भीतर विराजमान हैं। लेकिन जब आनन्द-स्वरूप परमात्मा मेरे ही भीतर मौजूद हैं, तो मेरा मन तरसता क्यों है? मेरा मन दुःखी क्यों है? मेरा मन अशान्त क्यों है? मुझ को तो आनन्द से झूमते रहना चाहिए। मेरा गीत तो कभी बन्द ही नहीं होना चाहिए। हम ऐसे शहंशाह हैं, जो भिखारी का जीवन जी रहे हैं। हम रोज उठकर गाते तो ज़रूर हैं कि 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव', कुछ रिश्ते भी गिना देते हैं कि तुम

ही मेरी माँ हो, पिता हो, मेरे बन्धु हो, सखा हो। हे परमात्मा! मेरे सभी रिश्ते तुम्हारे ही साथ हैं। फिर मैं एक मामूली-सा जीव भर कैसे हो सकता हूँ? मैं फिर दीन-हीन, कंगाल कैसे हो सकता हूँ? हे प्रभु! तुम हमारे सर्वस्व हो। मैं तुझ अनन्त-कोटि बह्माण्ड के नायक, कर्ता, नियन्ता ईश्वर की सन्तान हूँ।

सन्तान अपने पिता की उपलब्धियों पर मान करती है। फिर हमारा जो परमपिता है, उस परमात्मा की उपलब्धियों और शक्तियों के आगे तो कोई भी नहीं टिकता। जिस इंसान को यह बात समझ आ जाये, उसके जीवन में फिर एक अजीब-सी बेपरवाही आ जाती है। इसी को तो 'मलंग' कहते हैं। मलंग को किसी से राग नहीं, किसी से द्वेष नहीं, किसी से दोस्ती नहीं, किसी से दुश्मनी नहीं। वह अपने भीतर बैठे परमात्मा के साथ ही सब प्यार प्रेम कर लेता है। अगर पैदल चलना पड़े तो मलंग पैदल चलकर खुश है। पैदल भी चलता है, तो राजा बनकर फिर अगर किसी ने अपनी बढ़िया सी गाड़ी में बिठा लिया, तो उसमें भी शान से बैठता है।

सच यह है कि संसार के साथ आप उठते हो, बैठते हो, मौज़-मस्ती करते हो तो आप को खुशी होती है। अगर संसार में खुशी है, तो परमात्मा है परमानन्दरूप। जब कोई उसके प्रेम में रंग जाता है, तो जीवन मलंग हो जाता है। जब जीवन मलंग हो जाये, तो फिर हर हाल में, हर रूप में, हर स्वरूप में, खुशी में, गमी में, सुख में, दुख में, मान में, अपमान में, हर चीज़ में उसी के रंग को देखता है। जीवन के इन सप्त रंगों को देख-देख कर जीवन को उन रंगों से भरपूर भर लेता है। लेकिन यह तभी सम्भव होगा, जब भीतर प्रेम का रंग चढ़ जाये।

– आनन्दमूर्ति गुरुमाँ

महिमा वस्तु की नहीं है, उसके उपयोग की है।

सेवा के लिये सामग्री नहीं, हृदय की उदारता चाहिए

(कल्याण से उद्धृत)

‘सेवा’ शब्द एक बड़ा ही पवित्र शब्द है, यह शब्द जैसे ही सामने आता है, मन उत्साह से भर उठता है और अन्दर-ही-अन्दर ऐसी इच्छा उठने लगती है कि स्वयं को भी सेवा-कर्म में लगाना चाहिए, लेकिन कुछ समय बाद ही उत्साह ठण्डा पड़ जाता है कि मैं भला कैसे सेवा कर सकता हूँ? मेरे पास तो किसी भी प्रकार का संसाधन नहीं है इत्यादि, इत्यादि? बहुत बार मैंने लोगों को एक-दूसरे से बात करते हुए भी देखा है कि मैं सेवा करना चाहता हूँ, लेकिन मेरे पास ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसके माध्यम से सेवा कर सकूँ। अक्सर मैं सोचता हूँ कि क्या यह वास्तव में कोई समस्या है या सिर्फ सेवा न करने का मात्र बहाना? मैंने पाया कि इसे सिर्फ बहाना ही माना जा सकता है।

इस संसार में बहुत-से लोग ऐसे हैं, जिनके पास खूब संसाधन हैं फिर भी वे सेवाभाव से विरत पाये जाते हैं। बहुत-से लोग ऐसे हैं, जो संकल्प कर लें तो समाज की बहुत बड़ी सेवा कर सकते हैं, लेकिन अक्सर यह देखा गया है कि वे आत्म-केन्द्रित होते हैं और उनका अपना पूरा जीवन स्वयं के लिये सुख-सुविधायें जुटाते ही बीत जाता है अर्थात् उनका जीवन व्यर्थ ही बीत जाता है और सारी धन-दौलत, सम्पत्ति यहीं-की-यहीं धरी रह जाती है। इस प्रकार साधन रहने मात्र से सेवा नहीं की जा सकती, बल्कि उसके लिये हृदय की उदारता आवश्यक है। कुछ उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जायेगा कि सेवा हृदय की

उदारता पर निर्भर करती है न कि संसाधनों पर।

एक अत्यन्त साधारण आर्थिक स्थिति वाला व्यक्ति मुझसे बार-बार कहा करता था कि मैं सेवा करना चाहता हूँ, अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहता हूँ, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा है कि सेवा कैसे करूँ? हमने पूछा क्यों क्या परेशानी है? तो उसने कहा – मेरे पास कोई साधन नहीं हैं। मैंने उसे बताया कि सेवा के कई रूप हैं; जैसे – सड़क पर किसी वृद्ध आदमी को देखकर जो चल पाने में अपने को अशक्त महसूस कर रहा हो, उसे तुम अपनी मदद से उसके गन्तव्य स्थान पर छोड़ आओ, जब तुम ऐसा करोगे तो तुम्हें परम सन्तोष की अनुभूति होगी। कोई छोटी बच्ची सड़क नहीं पार कर पा रही हो तो उसे सड़क पार करा के सुख की अनुभूति कर सकते हो। कोई चोटिल व्यक्ति हो तो उसे हॉस्पिटल पहुँचा कर सामान्य मरहम-पट्टी करा सकते हो और ऐसा करने पर तुम्हें सन्तोष होगा और लगेगा कि तुम्हारा आज का दिन सार्थक रहा।

बहुधा यह देखा जाता है कि लोगों को अपने आसपास ही सेवा करने के पर्याप्त अवसर रहते हैं, लेकिन लोग निरपेक्ष बने रहते हैं। पूछने पर वे कहते हैं कि यह अमुक परिवार की समस्या है, इसमें पड़ना यानी अपने सर पर बवाल मोल लेना आदि-आदि। ऐसी ही छोटी सोच व्यक्ति को अपने संकीर्ण दायरे में रहने के लिये विवश करती है। ऐसे लोगों को यह समझना चाहिए कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी

है और उसका समाज के प्रति निश्चित कर्तव्य बनता है कि वह लोगों की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझे न कि पश्चिमी सोच को अपनाये। अरे भाई! आप उस देश के निवासी हैं; जहाँ का मूलमन्त्र है – ‘**वसुधैव कुटुम्बकम्।**’ जिस देश का दर्शन इतना व्यापक हो, वहाँ का कोई भी इंसान ऐसा कैसे सोच सकता है?

अक्सर यह देखा जाता है कि लोग सड़कों पर निरुद्देश्य घूमा करते हैं और उनके सामने ही कोई महिला रोती-बिलखती सहायता के लिये मदद माँग रही होती है। आपको उसकी मात्र इतनी ही सहायता करनी है कि आप उसे सान्त्वना दें कि बहन! आप शान्त हो जाइये। मैं आपके साथ हूँ, पूरा समाज आपके साथ है। यह बात आप जब उससे संवेदना से भरकर कहेंगे तो उसके अन्दर आशा का संचार होगा और एक बार फिर से उसमें जीवन के प्रति उत्साह जाग उठेगा। ऐसा करने में क्या जाता है? आपके दो मीठे बोल किसी की जिन्दगी बदलकर रख सकते हैं। उन्हें अच्छे कर्म में रत रहने की प्रेरणा दे सकते हैं, लेकिन दुर्भाग्य से लोग ऐसा नहीं कर पाते हैं। इसे मानव-जीवन की विडम्बना नहीं तो और क्या कहेंगे?

बहुत-से लोग ऐसे भी हैं, जो समाज में सेवा करते रहते हैं, लेकिन उन लोगों को पता ही नहीं चलता कि वे सचमुच समाज के लिये बहुत बड़ा कार्य कर रहे हैं। अक्सर मैं बहुत-से लोगों को छोटे, असहाय और कमजोर बच्चों को पढ़ाते-लिखाते, कुछ बताते हुए देखता हूँ, फिर भी उन्हें लगता है कि सही अर्थों में वे कुछ नहीं कर रहे हैं। मेरा मानना है कि ऐसा सोचना ठीक नहीं है। ज्ञान एक सामाजिक

सम्पत्ति है और यदि उसे आप समाज में बाँट रहे हैं तो समाज-सेवा का बड़ा ही पुनीत काम कर रहे हैं।

मेरे कुछ विद्यार्थी कहते हैं कि गुरुजी! मैं समाज के लिये कुछ करना चाहता हूँ, पर कर नहीं पा रहा हूँ। मुझे समाज सेवा करने का तरीका बताइये। मैं उन्हें बताता हूँ कि आप लोग गाँव-देहात से जुड़े हैं। गाँव-देहातों में आज भी अनेक अन्धविश्वास और कुरीतियाँ विद्यमान हैं। आप अपने क्षेत्रों में जाकर प्रेम की भाषा से उसे दूर करें, उन्हें सही दिशा में जीवनयापन के लिये प्रेरित करें, उनके जीवन में जो निराशा का भाव छाया हुआ है, उसे ज्ञान के माध्यम से दूर करके उन्हें आशावादी बनाने का काम करके समाज की बहुत बड़ी सेवा कर सकते हैं। निष्काम सेवा-भाव से जुड़कर जिस जीवन को आप बोझ समझ रहे होते हैं, वही पल आपको सार्थक बनाने के लिये पर्याप्त होता है।

समाज में बिना संसाधन के हृदय की भावना से प्रेरित होकर छोटे-छोटे सहयोग के माध्यम से अपने जीवन को रचनात्मक बनाते हुए जीवन को सार्थकता प्रदान कर सकते हैं। सेवा कार्य में संसाधन कभी भी बाधक नहीं बन सकता है। सेवा-भाव हृदय की अनुभूति है और जब यह अनुभूति पूरे वेग से उमड़ती है तो सेवा के लिये कदम अपने-आप बाहर निकल पड़ते हैं, उस समय छोटे से छोटा कार्य समाज के लिये करके इंसान को परम सन्तोष की प्रतीति होती है। सेवा सदैव हृदय से की जाती है न कि संसाधनों के माध्यम से।

– डॉ. मृत्युंजय कुमार त्रिपाठी



साधना परिवार की कार्यकारिणी के चुनाव
प्रिय साधकगण,

वर्तमान साधना परिवार की कार्यकारिणी का कार्यकाल अप्रैल 2025 को पूरा हो जायेगा। 20 अप्रैल 2025 को नवीन कार्यकारिणी का चुनाव करवाना निश्चित हुआ है। जो साधक भाई-बहन इसमें भाग लेकर साधना परिवार की सेवा करना चाहते हैं वे अपना नाम 10 अप्रैल तक साधना परिवार के हरिद्वार स्थित कार्यालय में भेज दें।

सभी साधकों से अनुरोध है कि वे चुनाव में उपस्थित होकर साधना परिवार की नई कार्यकारिणी समिति चुनने में अपना सहयोग दें।

रमना सेखड़ी, सचिव, साधना परिवार

श्री गुरुदेव निर्वाण दिवस साधना शिविर-2025

14 अप्रैल 2025 को पूज्य गुरुदेव को श्रद्धांजलि स्वरूप अखण्ड जाप होगा। 15 अप्रैल को प्रातः अखण्ड जाप की पूर्ति के समय गंगा के पावन तट पर पूज्य गुरुदेव को श्रद्धा सुमन अर्पित किये जायेंगे। तत्पश्चात् मन्दिर में आकर साधकगण अपनी श्रद्धांजलि के भाव गुरुदेव के चरणों में प्रस्तुत करेंगे। 15 अप्रैल को भण्डारे के बाद विश्राम रहेगा। शिविर 16 अप्रैल को प्रारम्भ करके 21 अप्रैल की प्रातः को पूर्ति की जायेगी।

साधना परिवार की कार्यकारिणी की बैठक 19 अप्रैल 2025 को कार्यालय में होगी। 20 अप्रैल को जनरल बॉडी की सभा रात्रि के समय धाम के प्रांगण में होगी।

साधना शिविर में भाग लेने वाले साधक अपने आने की सूचना मैनेजर साधना-धाम को 15 दिन पूर्व देने की कृपा करें।

दिगोली शिविर-2025

दिगोली तपस्थली शिविर की तिथि 5 मार्च से 9 मार्च 2025 निश्चित की गई हैं। भाग लेने वाले साधक गण कृपया अध्यक्ष जी को यथाशीघ्र सूचित करें।

बाल-साधना शिविर-2025

शिविर स्थान : स्वामी रामानन्द साधना-धाम,
संन्यास रोड, कनखल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

समय : 28 मई से 1 जून 2025 प्रातः तक

कुछ वर्षों से ग्रीष्मावकाश में बाल-साधना शिविर का आयोजन सफलतापूर्वक किया जा रहा है। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य है बालकों का आध्यात्मिक, चारित्रिक एवं शारीरिक विकास करना। पूज्य गुरुदेव स्वामी रामानन्द जी की साधना पद्धति की सरल ढंग से जानकारी दी जायेगी एवं व्यावहारिक साधना के अन्तर्गत व्यावहारिक ज्ञान दिया जायेगा। शिविर में जाप का आवाहन, गीता पाठ, भजन एवं गोष्ठी का संचालन बालकों के द्वारा ही होगा अतः तैयारी करके आये। प्रातः भ्रमण, खेल व योग के कार्यक्रम भी होंगे।

आवश्यक सामग्री : अपने पहनने के आवश्यक कपड़े, तौलिया, टूथपेस्ट व ब्रश, कंघा, साबुन, भ्रमण के लिये जूते, कापी, पैन् एवं पेन्सिल।

बिस्तर एवं बर्तनों की व्यवस्था साधना-धाम की ओर से होगी।

कृपया अपने आने की सूचना 15 दिन पूर्व साधना-धाम में व्यवस्थापक महोदय को पत्र या फोन द्वारा अवश्य दें। (फोन: 01334-311821, मोबाइल: 08273494285)

प्रतियोगितायें

बच्चों को तीन ग्रुपों में बाँटा जाएगा।

1. पहला ग्रुप 7 वर्ष से 10 वर्ष तक के बच्चे -
शिक्षाप्रद कहानियाँ।
2. दूसरा ग्रुप 11 वर्ष से 14 वर्ष तक के बच्चे -
सन्तों की कहानियाँ एवं संस्मरण।
3. तीसरा ग्रुप 15 वर्ष से 20 वर्ष के बालक व बालिकायें -
दिये गये विषय पर सामूहिक चर्चा (Group Discussion)।

श्री स्वामी रामानन्द जी साधना साहित्य

1. अध्यात्म विकास
2. आध्यात्मिक साधना (प्रथम खण्ड)
3. आध्यात्मिक साधना (द्वितीय खण्ड)
4. Evolutionary Outlook on Life
5. Evolutionary Spiritualism
6. जीवन-रहस्य तथा उत्पादिनी शक्ति
7. गीता विमर्श
8. व्यावहारिक साधना
9. कैलाश-दर्शन
10. गीतोपनिषद
11. हमारी साधना
12. हमारी उपासना
13. साधना और व्यवहार
14. अशान्ति में
15. मेरे विचार
16. As I Understand
17. My Pilgrimage to Kailash
18. Sex and Spirituality
19. Our Worship
20. Our Spiritual Sadhana Part-I
21. Our Spiritual Sadhana Part-II
22. स्वामी रामानन्द - एक आध्यात्मिक यात्रा
23. पत्र-पीयूष
24. स्वामी रामानन्द-चरित सुधा
25. स्वामी रामानन्द-वचनामृत
26. मेरी दक्षिण भारत-यात्रा
27. पत्तियाँ और फूल
28. दैनिक आवाहन विधि
29. Letters to Seekers
30. आत्मा की ओर
31. जीवन विकास - एक दृष्टि
32. विकासात्मक अध्यात्म
33. गुरु के प्रति निष्ठा
34. माँ की विभूति - भक्ति रस (भाग 1 से 5)
35. श्रीराम भजन माला
36. माँ का भाव भरा प्रसाद गुरु का दिव्य प्रसाद
37. पत्र-पीयूष सार
38. गीता पाठ
39. गृहस्थ और साधना
40. प्रभु दर्शन
41. प्रभु प्रसाद मिले तो
42. गीता प्रवेशिका - हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेजी में गीता का संग्रहीत संस्करण
43. अध्यात्म विषयक लेख
44. वन्दना, स्तुति, प्रार्थना तथा वैदिक सामान्य ज्ञान
45. Gita Vimarsh

इन पुस्तकों में श्री स्वामी जी ने अपनी विकासवादी नवीनतम साधना पद्धति का विस्तार से वर्णन किया है।

काम शक्ति तथा अध्यात्म विषय पर स्वामी जी द्वारा विशद् व्याख्या श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय 1-7 की स्वामी जी द्वारा विशद् व्याख्या पूज्य स्वामी जी द्वारा लिखित तीन लेखों - (1) साधकों के लिये, (2) दम्पति के लिये, (3) माता-पिता के प्रति का संकलन पूज्य स्वामी जी ने कुछ साधकों के साथ कैलाश-पर्वत की यात्रा व परिक्रमा की थी। उस यात्रा एवं उनकी आत्मानुभूति का विशद् वर्णन श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय 8-18 की स्वर्गीय श्री के.सी. नैयर जी द्वारा व्याख्या

श्री पुरुषोत्तम भटनागर द्वारा सम्पादित

जीवन-रहस्य

हमारी साधना

आध्यात्मिक साधना (प्रथम खण्ड)

आध्यात्मिक साधना (द्वितीय खण्ड)

स्वस्पष्ट प्रो. डा. लक्ष्मी सक्सेना

कु. शीला गौहरी द्वारा साधकों के नाम स्वामी जी के पत्रों का संकलन

स्व. डा. कविराज नरेन्द्र कुमार एवं वैद्य श्री सत्यदेव

श्री जगदीश प्रसाद द्विवेदी द्वारा गुरुदेव की पुस्तकों से संकलन

पूज्य सुमित्रा माँ जी द्वारा दक्षिण भारत यात्रा का रोचक वर्णन

भजन, पद, कीर्तन, आरती आदि का संकलन

स्वामी जी की साधना प्रणाली पर आधारित - श्रीमती महेश प्रकाश

कु. शीला गौहरी एवं श्री विजय भण्डारी द्वारा साधकों के नाम

स्वामी जी के अंग्रेजी पत्रों का संकलन

Evolutionary Outlook on Life का हिन्दी अनुवाद

Evolutionary Spiritualism का हिन्दी अनुवाद

तेजेन्द्र प्रताप सिंह

अनाम साधिका

श्री सूर्यप्रसाद शुक्ल 'राम सरन'

मीरा गुप्ता

पत्र-पीयूष का संग्रहीत संस्करण

रमेश चन्द्र गुप्त 'विनीत'

श्री कृष्ण गोयल द्वारा गीता विमर्श का English Translation